राजस्थान लोक सेवा आयोग
प्रारम्भिक परीक्षा
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

(राजस्थान का इतिहास, कला,संस्कृति, परम्परा एवं विरासत)

राजस्थान की कला

पाठ्यक्रम

कलाएं, चित्रकलाएं और हस्तशिल्प।

चित्रकला

राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला के अंतर्गत अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है और भारतीय कला के इतिहास में भी इसका अपना विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी चित्रकला को केवल राजपूत शैली या हिन्दू शैली की संज्ञा देना उचित नहीं है वरन् यह अनेक शैलियों का समन्वित रूप है।

राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल से ही चित्रकारी होती रही है। जिसके साक्ष्य चम्बल नदी घाटी क्षेत्र में तथा क्षेत्रों की पहाड़ियों के शैलाश्रयों में चित्रांकन के रूप में उपलब्ध हुए हैं। हड़प्पा युगीन कालीबांगा एवं ताम्रयुगीन अहाड़ पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त मृदपात्रों पर की गई चित्रकला उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में पोथियाँ लेखन के साथ चित्रित भी की जाती रही है। यह कार्य भोजपत्रों एवं ताड़पत्रों पर किया जाता था। इन पत्रों मे छेद कर ग्रंथित करने के कारण इन्हें ग्रंथ कहा जाता था। इस प्रकार के अनेक ग्रंथ आज भी जैन भण्डारों एवं संग्रालयों मे सुरक्षित है। जैसलमेर के भण्डारों मे 1060 ई. के दो ग्रंथ **''ओध नियुक्ति वृत्ति''** एवं **''दश वैकालिका सूत्र चूर्णि''** इस कला के दीप स्तम्भ है। इनमें कामदेव, हाथी, लक्ष्मी आदि का कलात्मक अकन प्रतिहार कालीन कला के महत्वपूर्ण साक्ष्य है 17वीं और 18वीं शताब्दी मे राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, बून्दी, कोटा, सिरोही, जैसलमेर, जयपुर आदि राज्यों मे चित्रकला की नई शैलियाँ विकसित हुई।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

''राजस्थानी चित्र शैली विशुद्ध रूप से भारतीय है''- ऐसा मत श्री लारेन्स विनियम ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। राजस्थानी शैली की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित है-

- **प्राचीनता**- राजस्थानी चित्रकला का इतिहास अति प्राचीन है। आरंभिक इतिहास से ही प्राप्त प्रमाणों में सूर्य, चाँद, पशुपति, पहाड़, ग्राम व प्रकृति आदि के चित्र मिलते है।
- **भारतीयता**- यह विशुद्ध भारतीय शैली है और भारतीयता की छाप इसके प्रत्येक चित्र मे परिलक्षित होती है।
- **कलात्मकता**- राजस्थानी चित्रकला से कलात्मकता की झलक मिलती है क्योकि इसकी शैली में अजन्ता शैली का समन्वय है। मध्यकाल मे मुगल शैली के सम्मिश्रण ने इसे एक नया रूप दिया।
- **रंग वैशिष्टय**- राजस्थान चित्रकला में रंगों का जादू विशेष उल्लेखनीय है। लाल, पीला, श्वेत एवं हरा इस शैली के प्रमुख रंग है जिनके समन्वय से चित्रकारों ने चित्रों को अनूठा बना दिया है। चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन शैली मे विशिष्ट है।
- **लोक जीवन का सानिध्य**- भित्ति चित्रण की परम्परा मे विकसित राजस्थानी अल्हड़ता और विषयवस्तु के चयन मे लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य है।
- **भाव-प्रवरता का प्रार्चुय**- राजस्थानी चित्रकला रस-प्रधान है। भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है।
- **विषय वस्तु का वैविध्य**- राजस्थानी चित्रकला विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है। राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथायें, नायक नायिका, भेद, राग-रागिनी, बारह-मासा, ऋतुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियो का चित्रांकन, लोक कथायें आदि असंख्य विषयो पर राजस्थानी चित्रकला आधारित है काव्य का चित्रण इस शैली की अपनी निजी विशेषता है। राजस्थान मे विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध है कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते है।
- **देशकाल की अनुरूपता**- राजपूत सभ्यता और संस्कृति तथा तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण राजस्थानी चित्रकला मे किया गया है। दुर्ग, प्रासाद, हवेलियाँ, दरबार आदि का राजपूती वैभव एव भक्ति काल और रीति काल का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला मे ही पाया जाता है।
- **प्राकृतिक परिवेश की अनुरूपता**- राजस्थानी चित्रकला में प्राकृतिक सरोवर, वन-उपवन, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षियो से भरे हुए निकुंज, मृग, मयूर, सिंह, हाथी आदि का सजीव चित्रांकन किया गया है।
- **नारी सौदर्य**- राजस्थानी चित्रकला शैली मे नारी सुन्दरता की खान है। भारतीय नारी के आदर्श सौदर्य की उसमे पूरी छटा है। राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के सौदर्य को उभारने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रो के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए है।

उपरोक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि राजस्थान चित्रकला माधुर्य से ओत-प्रोत कला है।

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण

राजस्थानी चित्रशैली का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई. मे श्री **आनंद कुमार स्वामी** ने अपनी पुस्तक **'राजपूत पेंटिग्स** मे किया। राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक, सांस्कृतिक आधार पर चार प्रमुख स्कूलों मे वर्गीकृत किया जा सकता है।-

मेवाड़ स्कूल	**मारवाड़ स्कूल**	**ढूँढ़ाड़ स्कूल**	**हाड़ौती स्कूल**
उदयपुर	जोधपुर	आमेंर	बूँदी
नाथद्वारा	बीकानेर	जयपुर	कोटा
देवगढ़	किशनगढ़	अलवर	दुगारी
चावण्ड़	जैसलमेर	उणियारा (टोंक)	
	अजमेर		
	नागौर		

मेवाड़ स्कूल

राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है। राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है। मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है। मेवाड़ चित्र शैली का **प्रथम चित्रित ग्रंथ** 1260 ई. का **'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि'** को माना जाता है द्वितीय चित्रित ग्रन्थ' **सुपासनाहचरित'** है जिसमें स्वर्ण चूर्ण का प्रयोग किया गया। राजस्थानी चित्रकला के मेवाड़ स्कूल को विद्वानों द्वारा चार शैलियों मे विभाजित किया गया है-

उदयपुर | नाथद्वारा उपशैली | देवगढ़ उपशैली | चावण्डशैली

उदयपुर (मेवाड़) उपशैली

1. प्रमुख शासक – महाराणा जगत सिंह प्रथम।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ – महाराणा तेजसिंह के काल में रचित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि एवं सुपासनाहचरित', गीत गोविंद आख्यायिका, 'रामायण शूकर' आदि।
3. प्रमुख चित्रकार – साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
4. प्रमुख रंग – पीला एवं लाल रंग।
5. प्रमुख आकृति व वेशभूषा – गठीला शरीर, लम्बी मूँछें, छोटा कद, विशाल नयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदार जामा, कानां मे मोती।
6. नारी आकृति व वेशभूषा – मीनाकृत आँखे, गरूड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी।
7. विशेष तथ्य – महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय तो मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
   - मेवाड़ शैली पर गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
   - मेवाड़ चित्रशैली मे बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का चित्रण अधिक मिलता है।
   - महाराणा जगतसिंह प्रथम ने राजमहल मे 'चितेरो की ओवरी' नाम से कला विद्यालय स्थापित करवाया जिसे 'तस्वीरां रो कारखानों के नाम से जाना जाता है।

नाथद्वारा उपशैली

1. प्रमुख शासक – महाराणा राजसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ – कृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते है।
3. प्रमुख चित्रकार – नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम, रेवा शंकर एवं कमला तथा इलायची (महिला चित्रकार)।
4. प्रमुख रंग – हरा एवं पीला।
5. पुरूष आकृति व वेशभूषा – पुरूषों मे पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों को भावपूर्ण चित्रण।
6. नारी आकृति व वेशभूषा – छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखे, शारीरिक स्थूलता एवं भावों मे वात्सल्य की झलक।
7. विशेष तथ्य – इस चित्रशैली मे पिछवाई एवं भित्ती चित्रण प्रमुख है।
   - इस चित्रशैली मे गाय, केले के वृक्षों को प्रधानता दी गई है।

देवगढ़ उपशैली

1. प्रमुख विषय – शिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य।
2. प्रमुख चित्रकार – कँवला, चोखा, बैजनाथ।
3. प्रमुख रंग – पीले रंगों का बाहुल्य।

4. विशेष तथ्य
- यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- इस शैली को सर्वप्रथम डॉ. श्रीधर अंधारे ने प्रकाशित किया।
- महाराणा जयसिंह के समय रावत द्वारिका दास चूंडावत ने देवगढ़ ठिकाना (राजसमंद) 1680 ई. मे स्थापित किया तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।

चावण्ड उपशैली

1. प्रमुख शासक – महाराणा प्रताप एवं महाराजा अमरसिंह।
2. प्रमुख चित्रकार – नसीरदी (निसारदी)।
3. प्रमुख चित्रित ग्रंथ – 'रंगमाला'

मारवाड़ स्कूल

राजस्थान चित्रशाला के मारवाड़ स्कूल को निम्नलिखित चित्र उपशैलियों मे विभाजित किया गया है-

जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, जैसलमेर, अजमेर, नागौर

जोधपुर उपशैली

1. प्रमुख शासक – महाराजा जसवंत सिंह एवं महाराजा मानसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ – 'सूरसागर' व 'रसिकप्रिया' पर आधारित 'दुर्गा सप्तरानी'।
3. प्रमुख चित्रकार – नारायणदास, अमरदास, बिशनदास, शिवदास, रतन जी भाटी।
4. प्रमुख रंग – पीला।
5. पुरूष आकृति – धनुष के समान बड़ी आँखे, घनी दाढ़ी-मूछें, लंबा व गठीला बदन, मोटी गर्दन, ऊँची पगड़ी, तुर्रा कलंगी, मोती की माला, ऊँट व घोड़ें पर सवार पुरूष।
6. नारी आकृति – गठीला बदन काले-लम्बे बाल, बादाम जैसी आँखे, पतली लंबी अंगुलियाँ, पतली कमर, कान तक भौंहे आदि।
7. विशेष तथ्य
   - यह शैली स्वतंत्र रूप से 'राव मालदेव' के समय विकसित हुई।
   - इस शैली मे आम के वृक्ष, ऊँट, घोड़ें एवं कुत्तों को प्रमुखता दी जाती है।
   - रागमाला-1632 ई. वीर विट्ल दास चांपावत द्वारा चित्रित। राजा गजसिंह प्रथम के समय।
   - कबूतर उड़ाती स्त्री, पेड़ की डाल पकड़कर झूलती हुं स्त्री का चित्रण।
   - महाराजा मानसिंह के समय रसराज ग्रन्थ पर आधारित 62 चित्रों को एक महत्वपूर्ण श्रृंखला बनी।
   - नाथ सम्प्रदाय की पारम्परिक जीवन शैली का चित्रन प्रधान विषय रहे।

चित्र	
– ढोला मारू	ढोला मरवण री बात
– जेठवा-उजली	मूमलदे-निहालदे
– वेलि किसन रूक्मनी री	छोटी झोंपड़ियां
– नाथ चिरित्र	पंचतंत्र
– रूपमति बाजबहादूर	मरू के टीले

बीकानेर उपशैली

1. प्रमुख शासक – महाराजा अनूपसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ व विषय – रसिक प्रिया, बारहमासा, रागरागिनी, कृष्णलीला, शिकार, सामंती वैभव आदि।
3. प्रमुख चित्रकार – मुन्नालाल, मुकुंद, रूकनुद्दीन, अलीरजा, उस्ता आसीर खाँ।
4. प्रमुख रंग – पीला रंग।
5. पुरूष आकृति – उग्र पुरूषाकृति, दाढ़ी, मूँछो से युक्त मुख, ऊँची शिखराकार पगड़ी, फैले हुए जामें, पीठ पर ढाल और हाथ मे भाले लिए हुए चित्रित।
6. नारी आकृति – लंबी नायिकाएँ, लंबी नाक, पतले अधर, मृगनयनी, उन्नव ग्रीवा। कमल समान आँखें, तंग चोली, घेरदार घाघरे, पारदर्शी ओढ़नी एवं मोतियों के सुसज्जित आभूषण।
7. विशेष तथ्य
   - महाराजा रायसिंह के समय चित्रित 'भागवत पुराण' ग्रंथ इस शैली का प्रारंभिक चित्र माना जाता है।
   - बीकानेर चित्रशैली पर मुगल, जैन स्कूल एवं दक्षिण शैली का प्रभाव पड़ा।
   - बीकानेर चित्रशैली आम, ऊँट एवं घोड़ों के चित्रण मुख्यत: मिलते है।
   - सामन्ती वैभव का चित्रण इस शैली का प्रमुख आधार।
   - बीकानेर शैली को मथंरण व उस्ता कलाकारों ने पल्लवित और पुष्पित किया।
   - रायसिंह के समय उस्ता अलीराजा तथा उस्ता हामिद रूकनुद्दीन मुख्य चित्रकार थे।
   - बीकानेर के राजकीय संग्रहालय में जर्मन चित्रकार ए.एच.मूलर द्वारा चित्रित यथार्थवादी शैली के चित्र रखे गये।

किशनगढ़ उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	राजा सावंतसिंह 'नागरीदास'
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ व विषय	–	बणी–ठणी, चाँदनी रात की संगीत गोष्ठी गीत गोविंद, भागवान गीत आदि पर आधारित चित्र।
3. प्रमुख चित्रकार	–	निहालचंद, सूरध्वज मोरध्वज, भंवरलाल, लाडलीदास, छोटू, अमीरचंद, धन्ना।
4. प्रमुख रंग	–	सफेद एवं गुलाबी।
5. पुरूष आकृति	–	छरहरें पुरूष, पतले अधर, लंबी बाँहे, लंबी ग्रीवा, उन्नत ललाट, मादक भाव युक्त नेत्र, कमर मे दुपट्टा।
6. नारी आकृति	–	कमल एवं खंजन सी काली आँखे, चाप के समान लंबी भृकुटि, लंबी व सुराहीदार गर्दन, दीर्घ नाक, लंबे बाल, लम्बी नायिकाएँ, लँहगा, चोली एवं पारदर्शी आँचल से सज्जित।
7. विशेष तथ्य	–	इस शैली को प्रकाश मे लाने का श्रेय विद्वान एरिक डिक्सन एवं डॉ. फैयाज अली को जाता है।
	–	इस शैली की प्रमुख विशेषता 'नारी सोंदर्य' है।
	–	यह चित्रशैली कांगड़ा शैली एवं ब्रज साहित्य से प्रभावित है।
	–	इस चित्रशैली का प्रमुख चित्र **'बणी–ठणी'** है।
	–	चाँदनी रात की संगोष्ठी–चित्रकार अमीरचन्द द्वारा सांवतसिंह के समय बनाया गया चित्र।
	–	वेसरि (नाक का आभूषण) अनोखा व प्रमुख आभूषण।
	–	बिहारी चिन्द्रिका रत्नावली, रसिक, रत्नावली और मनोरथ मंजरी आदि काव्यों की सांवत सिंह से रचना की।
	–	भित्ति चित्रण व रागरागिनी चित्रण इस शैली में बिल्कुल भी उपलब्ध नहीं है।

अजमेर उपशैली

1. प्रमुख चित्रकार	–	चाँद, नबला, तैयव, रायसिंह, लालजी व नारायण भाटी एवं एक महिला चित्रकार साहिबा।
2. प्रमुख रंग	–	सुहानी रंग योजना (लाल, पीले हरे, नीले के साथ बैंगनी रंग का विशेष प्रयोग होता है।)
3. प्रमुख आकृति	–	लंबे एवं वीरोचित गुणों से युक्त पुरूष, गोल आँखे, लंबी जुल्फें, बाँकी एवं छल्लेदार मूँछे।
4. नारी आकृति	–	आकर्षक महिलाएँ, लंबे, घने एवं काले बाल, पैनी अंगुलियाँ, लहंगा, बसेड़ा एवं आकर्षक आभूषण।

जैसलमेर उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	महारावल हरराज, अखैसिंह व मूलराज।
2. प्रमुख चित्र	–	मूमल।
3. पुरूष आकृति	–	पुरूषों के मुख पर दाढ़ी–मूँछे, तथा मुखाकृति ओज व वीरता से पूर्ण।
4. नारी आकृति	–	खिंचे हुए यौवन दीप्ति से परिपूर्ण मुख।

नागौर उपशैली

1. प्रमुख चित्र एवं विषय	–	इस शैली मे जोधपुर, बीकानेर, अजमेर मुगल एवं दक्षिण शैलियों का मिश्रित रूप मिलता है।
2. प्रमुख रंग	–	इस शैली मे बुझे हुये रंगों का प्रयोग अधिक मिलता है।
3. नारी आकृति	–	इस शैली मे लंबी नाक, छोटी आँख, चपटे ललाट वाली नायिका का चित्रण मिलता है।
	–	पारदर्शी वेशभूषा इस शैली की अनूठी विशेषता है।
4. विशेष तथ्य	–	मारवाड़ शैली का दूसरा प्रमुख केन्द्र।
	–	व्यक्ति चित्रण की परम्परा।
	–	शैली का सही और सर्वाधिक स्वरूप नागौर किले के महलों के भित्ति चित्रों में।
	–	नागौर किले में भित्ति चित्रों की सजावट राजा बख्तसिंह के समय।

ढूँढ़ाड़ स्कूल

राजस्थानी चित्रशैली का ढूँढ़ाड़ स्कूल केवल जयपुर शहर तक ही सीमित नही है, बल्कि इसके आस–पास के नगरों में भी विस्तृत है। ढूँढ़ाड़ स्कूल की चित्रशैलियों को निम्नलिखित भागो में वर्गीकृत किया जा सकता है–

जयपुर उपशैली | अलवर उपशैली | अजमेर उपशैली | उनियारा उपशैली

जयपुर उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	सवाई प्रतापसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ	–	आदमकद चित्र, शिकार, युद्ध प्रसंग, कृष्ण लीला, रागमाला, महाभारत, रामायण, गीत–गोविंद पर आधारित चित्र।
3. प्रमुख चित्रकर	–	साहिबराम, मोहम्मद शाह, सालिगराम, रामजीदास, रघुनाथ, लालचंद, गंगाबख्श।
4. प्रमुख रंग	–	केसरिया पीला, हरा एवं लाल रंग।
5. पुरूष आकृति	–	चेहरा साफ, हाथ में तलवार, पगड़ी, कुर्ता, जामा, चोगा, अंगरखी, पटका एवं जूते पहने हुए।

6. स्त्री आकृति	–	बड़ी मछली जैसी आँखे, लंबे बाल, अंडाकार चेहरा, उठी हुई भौहे, छोटा कद, चोली, कुर्ता, दुपट्टा, बेसर, लहंगा, कामदार जूतियाँ, पहने हुए।
7. विशेष तथ्य	–	जयपुर चित्रशैली की मुख्य विशेषता आदमकद, बड़े पोट्रेट एवं भित्ति चित्रण है। सहिबराम चित्रकार ने ईश्वरी सिंह का आदमकद चित्र बनाया।
	–	जयपुर शैली पर 'मुगल शैली' का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है।
	–	इस चित्रशैली में पीपल, बड़, घोड़ा व मयूर एवं नीले बादलों का अंकन मुख्य विशेषत रही है।
	–	इसमें चांदी, सोना जस्ता व मोतियों का प्रयोग।
	–	**असावरी रागिनी**-जयपुर शैली का शबरी का चित्र जिसमें उसके केंशों, अल्प कपड़ों व चन्दन के वृक्षों का चित्रण

अलवर उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	महाराजा विनयसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय	–	'चंडी पाठ' एवं 'दुर्गा सप्तशती-I कृष्ण चरित्र, रामचरित्र, दरबार, संगीत, नायिकायें आदि।
	–	**योगासन** इस चित्रशैली का सबसे प्रमुख विषय रहा है।
3. प्रमुख चित्रकार	–	डालचंद, नानगराम, वलदेव, बुद्धराम, गुलामअली, सालगा।
4. प्रमुख रंग	–	हरे, नीले एवं सुनहरे रंगों का प्रयोग।
5. पुरूष आकृति	–	गले में रूमाल, कमर तक अंगरखा, एवं जयपुर जैसी पगड़ी।
6. नारी आकृति	–	मछली के समान आँखे, पान की पीक से सनें होंठ, कमान की तरह तनीं हुई भौहे, गोल मुँह, ठिगना कद आदि।
7. विशेष तथ्य	–	अलवर चित्रशैली की सबसे प्रमुख विशेषता 'गणिकाओं के चित्र' है।
	–	यह चित्रशैली ईरानी, मुगल एवं जयपुरी शैली का समन्वित रूप है।
	–	इस शैली मे हाथी दाँत पर चित्र बनाने के लिए मूलचंद नामक चित्रकार प्रसिद्ध है।
	–	यह शैली बार्डर चित्रण के लिए प्रसिद्ध।
	–	विनयसिंह के काल मे संत शेख सादी की पुस्तक गुलिस्तां की पांडुलिपी को भारतीय फारसी शैली में गुलाम अली ने चित्रांकित किया था।

आमेर उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	मानसिंह एवं मिर्जा राजा जयसिंह।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय	–	आदिपुराण, रज्मनामा, भागवत, यशोधर चरित्र आदि ग्रंथ एवं बिहारी सतसई पर आधारित चित्र।
3. प्रमुख चित्रकार	–	हुकुमचंद, मन्नालाल, पुष्पदत्त, मुरली।
4. प्रमुख रंग	–	कालूस, सफेदा, हिरमिच, गैरू, खड़ी आदि प्राकृतिक रंगों का प्रयोग।
5. विशेष तथ्य	–	इस शैली पर 'मुगल शैली' का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है।
	–	इस शैली की समृद्ध परम्परा भित्तिचित्रों के रूप में उपलब्ध होती है।

उणियारा उपशैली

1. प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय	–	'कविप्रिया' पर आधारित चित्र बारहमासा, राजाओं के व्यक्ति चित्र एवं अनेक धार्मिक चित्र।
2. प्रमुख चित्रकार	–	कंवला, बख्ता, धीमा, मीर बख्श, काशीराम, आदि।
3. विशेष तथ्य		जयपुर तथा बूंदी का समन्वित चित्रण।
	–	कवला व बख्ता ने बिशनसिंह के समय सुन्दर चित्रण किया।

हाड़ौती स्कूल

राजस्थान के बूँदी, कोटा और झालावाड़ क्षेत्र पर चौहानवंशी हाड़ाओं का प्रभुत्व रहा, इसलिये यह क्षेत्र हाड़ौती क्षेत्र कहलाया। हाड़ौती स्कूल के अंतर्गत निम्नलिखित चित्र उपशैलियाँ आती है-

(अ) कोटा उपशैली (ब) बूँदी उपशैली (स) दुगारी उपशैली

कोटा उपशैली

1. प्रमुख शासक	–	महाराव रामसिंह, महारावल भीमसिंह प्रथम, महाराव शत्रुसाल। इस शैली का सर्वाधिक चित्रण 'महाराव उम्मेदसिंह प्रथम' के काल में हुआ।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय	–	भागवत पुराण, ढोला-मारू, दरबारी दृश्य,शिकार, हाथियों के युद्ध, बारहमासा, राग रागिनियां, बड़े देवता की हवेली और युद्ध निदर्शन इस चित्रशैली के प्रमुख विषय है।
3. प्रमुख चित्रकार	–	डालू, लच्छीराम, नूर मोहम्मद, रघुनाथ, हेमराज जोशी, गोविंदराम।
4. प्रमुख रंग	–	हल्के रंग, पीले एवं नीला रंग।
5. पुरूष आकृति	–	उन्नत भौह, बड़ी दाढ़ी मूँछ तलवार और कटार आदि हथियारी से युक्त वेशभूषा, मोतियों से जुड़े आभूषण पहने हुए।

6. स्त्री आकृति – गोल चेहरा, छोटी गर्दन, सुदीर्घ नासिका, मृग से नयन, क्षीण कटि, छोटा कद, मोटा शरीर।
7. विशेष तथ्य – कोटा शैली का स्वतंत्र अस्तित्व 'महाराव रामसिंह' के समय में स्थापित हुआ।
– कोटा चित्रशैली मे रानियों को शिकार करते हुयें भी चित्रित किया गया है।
– इस चित्र शैली मे भित्ति चित्रण की प्रमुखता है, एवं यहाँ की झाला हवेलियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र है।
– 1768 ई. में डालूराम नामक चित्रकार के द्वारा चित्रित रागमाला सैट कोटा चित्रकला का सर्वाधिक बड़ा (महाराव गुमान सिंह के समय)
– इसमें शिकार दृश्यों का अंकन तथा नारी सौन्दर्य का सजीव चित्रण।

बूँदी उपशैली

1. प्रमुख शासक – राव भावसिंह। बूँदी शैली के चित्रों का रेखांकन 'रावसुरजनसिंह' के समय हुआ।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय – राग रागिनी, नायिका भेद, ऋतु वर्णन, बारहमासा, रसिकप्रिया, सामंती परिवेश का चित्रांकन, शिकार, हाथियों के युद्ध, घुड़दौड़, रागरंग,मतिराम के रसराज पर आधारित चित्रण, सामंती परिवेश का विस्तृत चित्रांकन, वर्षा में नाचता मोर, पेड़ों की छाया में बैठे शिकारी, फत्वारों के पास विचरण करते प्रेमी युगल ।
3. प्रमुख रंग – हरा रंग।
4. पुरूष आकृति – लंबा पतला शरीर, बूड़ी मूँछ, गोलाकार ललाट, अरूणिमा युक्त झुकी पगड़ियाँ, घुटने तक लंबे पारदर्शक जामें।
5. स्त्री आकृति – गोल मुख, कमल के समान आँखे, छोटी गर्दन, लंबी बाँहे, पतला शरीर, लाल एवं पारदर्शक चुनरी।
6. विशेष तथ्य – इस चित्रशैली मे **पशु पक्षियों का चित्रण बहुलता** से हुआ है।
– इस चित्रशैली मे **रेखाओं का सर्वाधिक अंकन** होता है।
– यह शैली ईरानी, दक्षिणी, मराठा एवं मेवाड़ शैली से प्रभावित है।
– इस शैली मे मुख्यतः सरोवर, केले एवं खजूर के वृक्षों का चित्रण किया गया है।
– राव रतनसिंह को चित्रकला प्रेम के कारण जहांगीर ने सर बुलन्दराय की उपाधि प्रदान की।
– शत्रुशाल (छत्रशाल) (1631-58) द्वारा निर्मित रंगमहल भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध।
– महाराव उम्मेदसिंह के शासन काल में चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ। महाराव विशनसिंह के समय शेरों के शिकार के चित्र बने।
– चित्रकार-सुरजन, डालू, अहमद, रामलाल, भीखराज।

दुगारी उपशैली

– नैनवा (बूंदी) के पास स्थित सीताराम मंदिर की चित्रशाला मे चित्रांकित शैली।
– चित्रों मे स्वर्णकलम का प्रयोग, भगवान राम केन्द्रित चित्र प्रधानता।
– वनस्पति रंग की प्रधानता वाली शैली।
– प्रमुख चित्र मत्स्यावतार व कश्यपावतार।

नोट – एकमात्र चित्रशैली जिसमें चित्रकार स्वयं ही चित्र के नीचे शीर्षक लिखता है जैसे-'राम जी झुलों झुलें है।'

वृक्ष		चित्रशैली
कदम्ब	–	उदयपुर शैली
केला	–	किशनगढ़ शैली
खजूर	–	कोटा, बूंदी शैली
पीपल, वट	–	अलवर, जयपुर शैली
आम	–	जोधपुर, बीकानेर शैली

पशु-पक्षी		चित्रशैली
कौआ, चील, ऊँट, घोडे-		जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	–	उदयपुर शैली
गाय	–	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	–	जयपुर, अलवर शैली

आंखों की बनावट		चित्र शैली
आंखे हिरण के समान	–	नाथद्वारा शैली
आंखे खजन के समान	–	किशनगढ़ शैली
आंखे बादाम के समान	–	जोधपुर शैली
ऊपर-नीचे के रेखा सामांतर-		बूंदी शैली
आंखे मछली के समान	–	उदयपुर, जयपुर शैली
आंखे कमान के समान	–	किशनगढ़ शैली

शैली	–	रंग
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	–	पीला
नाथद्वारा	–	पीला-हरा
अजमेर	–	पीला-लाल-हरा-बेंगनी
किशनगढ़	–	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	–	पीला-लाल
कोटा	–	पीला-हरा-नीला
बूंदी	–	हरा
जयपुर	–	केसरिया, हरा, लाल

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं

संस्था	-	स्थान
चितेरा	-	जोधपुर
धोरां	-	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	-	उदयपुर
टखमण -28	-	उदयपुर
कलावृत	-	जयपुर
पैग	-	जयपुर
आयाम	-	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	-	जयपुर
अंकन	-	भीलवाड़ा।

राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय

पोथीखाना	-	जयपुर
पुस्तक प्रकाश	-	जोधपुर
सरस्वती भण्डार	-	उदयपुर
जैन भण्डार	-	जैसलमेर
कोटा संग्रहालय	-	कोटा
अलवर संग्रहालय	-	अलवर

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

ललित कला अकादमी -जयपुर

- स्थापना 24 नवम्बर 1957
- कलात्मक गतिविधियों का संचालन कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना प्रमुख कार्य।
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह II द्वारा स्थापित तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

जवाहर कला केन्द्र-जयपुर

- स्थापना- 8 अप्रैल 1993
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरूधरा की अनमोल धरोहर के सरंक्षण हेतु।

निर्माण कैप्सूल

- क **सुरजीत सिंह चोयल** (जयपुर)-राजस्थान की पहली महिला चित्रकार।
- **हरिराम सोनी**-चावल पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध।
- श्री **कुन्दन लाल मिस्त्री** को राजस्थान में आधुनिक चित्रकला को आरम्भ करने का श्रेय।
- **कृष्णा कनाही** राजस्थानी चित्रकार है जिन्हें पदम पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।
- **नाथद्वारा**-श्रीनाथ जी का पाना सबसे अधिक कलात्मक।
- हाड़ौती में शैल चित्रों को खोजने का काम सर्वप्रथम वर्ष 1953 में पद्म श्री **डॉ. विष्णु श्रीधर वाकण धर** ने किया।
- **राम गोपाल विजय वर्गीय** - जन्म-1905, बालेर (सवाई माधोपुर) । परम्परा वादी चित्रकार। सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण। राजस्थान में एकल चित्रण प्रदर्शनी प्रारम्भ करने का श्रेय। राजस्थान स्कूल आर्ट के प्राचार्य रह चुके। पदमश्री 1984ई.।
- **भूरसिंह शेखावत**-जन्म-1914 धोंधलिया (बीकानेर)। खाना बनाती स्त्री, सब्जी तोलती मालिन, सारंगी बाजते कलाकार, राष्ट्रभक्त नेता, शहीद, क्रांतिकारी, लौह पुरूष आदि इनके प्रमुख चित्र।
- **गोवर्धन शेखावत**-जन्म-कांकरोली (राजसमंद) भीलों के चितेरे। मेवाड़ी भीलों की जीवन शैली को चित्रित किया परम्परावादी चित्रकार थे।
- **सौभाग मल गहलोत**- जयपुर। नीड। का चितेरा कहते है।
- **ज्योति स्वरूप**-जोधपुर
- **जंगल** (Inner Juwgle) इनकी मुख्य चित्र श्रृंखला। शिवशक्ति ज्योति स्वरूप अन्य चित्र श्रृंखलाएं। प्रयोगवादी चित्रकार (Morden)।
- **परमानंद चोयल**-कोटा, भैंसों का चितेरा
- **सुरजीत कौर चोयल**- जयपुर, देश की पहली महिला चित्रकार जिनके चित्रों की प्रदर्शनी जापान की प्रतिष्ठत कला दीर्घा फुकोका संग्रहालय में। पी.एन. चोयल की पुत्र वुध।
- **किशन शर्मा**-बेंगु (चित्तौड़)। तिल व राई। के दानों पर मीरा का चित्र बनाया।
- दर-भरतपुर, आलणीयाँ-कोटा, बैराठ-जयपुर, तथा चम्बल के शैलाश्रयों में आदिमानव के चित्र मिले।
- आनन्द कुमार-राजस्थानी चित्रकला को राजपूत चित्रकला कहते है।
- दसवें कालिक सूत्र चुर्णि जैसलमेर के जैन भद्रसूरि ग्रन्थ भण्डार में रखे गये राजस्थान के सर्वाधिक आघनिर्युक्तिवृत्ति प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रन्थ।
- **सबीह** - मुगल प्रभाव के कारण राजस्थानी चित्रकला में व्यक्ति चित्र बने। इस प्रकार के चित्र जयपुर शैली में सबसे अधिक बनाये गये।

हस्त शिल्प

राजस्थान में मानव सभ्यता के काल से ही हस्तशिल्प के प्रमाण मिलते है, जिनमें तीसरी शताब्दी ई. पू. के कलात्मक स्तम्भ शामिल है। मानव के विकास की यात्रा के साथ ही राजस्थान मे हस्तशिल्प फला-फुला है। इतना ही नहीं, अपने बहुविविध स्वरूप के कारण राजस्थान को हस्तशिल्प का संग्रहालय कहा जा सकता है। प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों जैसे कालीबंगा, आहड़ आदि के पुरातात्विक अवशेषो से तत्कालीन हस्तशिल्प जैसे मिट्टी की चूड़ियाँ, पॉलिश किये गये चमकदार बर्तन, औजार, वस्त्राभूषण आदि पर प्रकाश पड़ता है। आज राजस्थान के हस्तशिल्प ने अंतराष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त कर लिया है।

राजस्थान की बुनाई, छपाई, रंगाई, जवाहरात की कटाई, मीनाकारी, आभूषण निर्माण, बंधेज, गलीचा एवं नमदा की बुनाई, संगमरमर, हाथीदाँत, चंदन, लाख व काष्ठ क कलात्मक कार्य, चीनी मिट्टी का काम, धातु की कारीगरी, चमड़ें की जूतियाँ व थैले, पुस्तकों पर कलात्मक लेखन, चूड़ियाँ निर्माण कार्य, टेराकोटा (मिट्टी से बनी वस्तुएँ जैसे मूर्तियाँ बर्तनादि) इत्यादि प्रसिद्ध है। राजस्थान में प्रचलित हस्तशिल्पों का परिचय निम्नाकिंत है-

मंसूरिया

कोटा से 15 किमी. दूर बुनकरों का एक गांव है, कैथून। कैथून के बुनकरों ने चौकोर बुनाई जाने वाली सादी साड़ी को अनेक रंगों और आकर्षक डिजाइनो मे बुना है तथा सूती धागे के साथ रेशमी धागे, और जरी का प्रयोग करके साड़ी की अलग ही डिजाइन बनाई है। साड़ी का काम बुनकर अपने घर मे खड्डी लगाकर करते है। पहले सूत का ताना बुना जाता है। फिर सूत या रेशम को चरखे पर लपेटकर लच्छियाँ बनाई जाती है। धागे की लकड़ियों की गिल्लियों पर लपेटा जाता है, फिर ताना-बाना डालकर बुनने का काम किया जाता है वर्तमान मे कोटा डोरिया साड़ी का निर्यात भी विदेशों मे किया जा रहा है।

निर्माण कैप्सूल

- कोटा के पास कैथून गांव के बुनकारों द्वारा चौकोर बुनाई से बनाई जानी वाली सादी साड़ी को अनेक रंगों और डिजाइनों से बुना जाता है।
- असली कोटा डोरिया साड़ी की पहचान वर्गो की संख्या से होती है। यदि साड़ी में वर्गों की संख्या 300 है तो उसे असली कोटा डोरिया की साड़ी माना जाता है।
- 1761 में कोटा के प्रधानमंत्री झाला जालिमसिंह ने मैसूर के बुनकर महमूद मसूरिया को कोटा बुलाया और यहां हथकरघा उद्योग की स्थापना कर साड़ी बुनना शुरू किया, उसी के नाम पर साड़ी का नाम मसूरिया साड़ी हो गया।

गलीचे और दरियाँ

जयपुर और टोंक का गलीचा उद्योग प्रसिद्ध है। सूत और ऊन के ताने-बाने लगाकर लकड़ी के लूम और गलीचे की बुनाई की जाती है। बुनाई मे जितना बारीक धागा और गाँठें होती है, गलीचा उतना ही खूबसूरत एवं मजबूत होता है। जयपुर के गलीचे गहरे रंग, डिजाइन और शिल्प कौशल की दृष्टि से प्रसिद्ध है। गलीचा महंगा होने के कारण आजकल दरियों का प्रचलन अधिक है। जयपुर और बीकानेर की जेलो मे दरियाँ बनाई जाती हैं। जोधपुर, नागौर, टोंक, बाड़मेर, भीलवाड़ा, शाहपुरा, केकड़ी और मालपुरा दरी-निर्माण के मुख्य केन्द्र है। जोधपुर जिल के सालावास गांव की दरियाँ बड़ी प्रसिद्ध है।

निर्माण कैप्सूल

- जयपुर गलीचे निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
- टोंक ऊनी नमदों के लिए प्रसिद्ध है।
- नागौर का टांकला गांव दरियों के लिए प्रसिद्ध है।
- दौसा का लावण गांव भी दरियों के लिए प्रसिद्ध है।

ब्ल्यू पॉटरी

जयपुर में ब्ल्यू पॉटरी निर्माण की शुरूआत का श्रेय महाराजा रामसिंह (1835-80 ई.) को है। उन्होने चूड़ामन और कालू कुम्हार को पॉटरी का काम सीखने दिल्ली भेजा और प्रशिक्षित होने पर उन्होने जयपुर मे इस हुनर की शुरूआत की। बाद मे कृपालसिंह शेखावत ने इस कला को देश-विदेश मे पहचान दिलाई। ब्ल्यू पॉटरी के निर्माण के लिए पहले बर्तनों पर चित्रकारी की जाती है, फिर इन पर एक विशेष घोल चढ़ाया जाता है। यह घोल हरा काँच, कथीर, साजी, क्वार्ट्ज पाउडर और मुल्तानी मिट्टी से मिलाकर बनाया जाता है। चित्रकारी का प्रारूप तो बर्तनों पर पहले ही हाथ से बना लेते है, किन्तु यदि लाइनें खीचनी हो तो चाक, पर रखकर ही लाइनें खींची जाती है। ब्ल्यू पॉटरी के रंगों मे नीला, हरा, मटियाला और ताम्बाई रंग ही विशेष रूप से काम मे लेते है।

निर्माण कैप्सूल

- जयपुर, कोटा, अलवर ।
- जयपुर, मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग की रंगीन और आकर्षक चित्रकारी को ब्ल्यू पॉटरी कहते है।
- ब्ल्यू पॉटरी का जन्म ईरान में माना जाता है।
- जयपुर में ब्ल्यू पॉटरी प्रारंभ करने का श्रेय मानसिंह प्रथम को है, जबकि सवाई रामसिंह-II के समय इस कला का विकास हुआ।
- अलवर की डबल कट वर्क की पॉटरी को कागजी कहा जाता है। कोटा को सुनहरी ब्लेक पॉटरी फूलदानों, मटकों और प्लेटों के लिए प्रसिद्ध है। बीकानेर की पॉटरी में लाख के रंगों का प्रयोग होता है।
- **कृपाल सिंह शेखावत**-मऊ(सीकर) भारतीय परम्परा का युग पुरूष,ब्ल्यू पॉटरी का जन्मदाता,1974 पद्मश्री,1980 कलाविद सम्मान।

थेवा कला

थेवा कला काँच पर सोने का सूक्ष्म चित्रांकन है। काँच पर सोने की अत्यन्त बारीक, कमनीय एवं कलात्मक कारीगरी को 'थेवा' कहा जाता है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है। थेवा के लिए चित्रकारी का ज्ञान आवश्यक होता है। अलग-अलग रंगों के काँच पर सोने की चित्रकारी इस कला का आकर्षण है। थेवा कला मे नारी श्रृंगार के आभूषण एवं अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनायी जाती है। विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी थेवा कला से अलंकृत की जाती है। थेवा कला से अलंकृत आभूषणों का मूल्य धातु का न होकर कलाकार की कला का होता है। इस कला मे सोना कम एवं मेहनत अधिक होती है। थेवा कला विश्व मे केवल प्रतापगढ़ तक ही सीमित है। थेवा कला में कांच पर सोने का सुक्ष्म कारीगर पन्नीगर कहलाते है। यह वर्क बनाने की कला पन्नीनरी कहलाती है। जयपुर इसका प्रसिद्ध केन्द्र है।

रंगाई, छपाई व बंधेज के वस्त्र

जयपुर का बंधेज प्रसिद्ध है। मनपसंद रंगों के डिजाइन प्राप्त करने के लिए कपड़े को बाँधकर फिर रंगा जाता है। बंधेज खोलने पर तरह-तरह के डिजाइन बन जाते है। यह कला 'बांधो और रंगों' (Tie & Die) के नाम से प्रसिद्ध है। राज्य मे अनेक प्रकार के बंधेज प्रचलित है। चून्दरी और साफे पर बन्धेज का कार्य लोकप्रिय है।

चित्तौड़ में जाझम की छपाई की जाती है, जो पूरे राज्य मे प्रसिद्ध है यहीं गाड़िया लोहारो के लिए घाघरे-ओढ़नी भी तैयार किए जाते है। गोटे का काम जयपुर और खंडेला (सीकर) का प्रसिद्ध है। जरी के काम मे भी जयपुर की पहचान है।

दाबू प्रिन्ट

- चित्तौड़गढ जिले का आकोला गांव **दाबू प्रिन्ट** के लिए प्रसिद्ध है। रंगाई-छपाई मे जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे लई या लुगदी से दबा देते है। यही लुगदी या लई जैसा पदार्थ 'दाबू' कहलाता है, क्योकि यह कपड़े के उस स्थान को दबा देता है, जहाँ रंग नही चढ़ाना होता है। सवाई माधोपुर मे मोम का, बालोतरा मे मिट्टी का तथा सांगानेर व बगरू में गेहूँ के बींधण का दाबू लगाया जाता है।
- आकोला मे रंगाई-छपाई के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ है। पानी, मिट्टी और वनस्पति जैसे आवश्यकताएँ स्थानीय रूप से उपलब्ध है आकोला के दाबू प्रिन्ट के बेडशीट, कपड़ा, चून्दड़ी व फेंटिया देश-विदेश में प्रसिद्ध है। चून्दड़ी एवं फेंटिया ग्रामीण क्षेत्रों मे पसंद किया जाता है।
- **वार्तिक**-कपड़े पर मोम की परत चढ़ाकर चित्र बनाने की कला को कहते है।

रंगाई-छपाई

- सांगानेर में छपाई का कार्य चूनड़ी, दुपट्टा, गमछा, साफा, जाजम, तकिया आदि पर किया जाता है। सांगानेरी छपाई लट्ठा या मलमल पर की जाती है। तैयार कपड़े पर विभिन्न डिजाइनों की छपाई की जाती है। इन छपे वस्त्रों को नदी मे धोया जाता है। सांगानेर के पास अमानीशाह के नाले से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी प्रिन्ट में प्राय: काला और लाल दो रंग की ज्यादा काम आते है। सांगानेरी प्रिन्ट को विदेशों मे लोकप्रिय बनाने का श्रेय मुन्नालाल गोयल को है।
- बगरू (जयपुर) की छपाई आजकल काफी लोकप्रिय है। यह प्रिन्ट सांगानेरी प्रिंट की ही तरह है परंतु सांगानेरी छापे मे आगन सफेद होता है, जबकि बगरू प्रिन्ट का आंगन हरापन लिए होता है। बगरू की छपाई मे रासायनिक रंगों का प्रयोग नही होता है।
- बाड़मेर अजरक प्रिन्ट के लिए प्रसिद्ध है। अजरक प्रिंट में अधिकांश लाल और नीले रंगों से छपाई कार्य होता है। रंगाई-छपाई की दृष्टि से महिलाओं के लिए जोधपुर की चुनरी तथा जयपुर का लहरिया प्रसिद्ध है।

कुट्टी का काम (जयपुर)

- कुट्टी के काम के लिए जयपुर विख्यात है। महाराजा रामसिंह के शासनकाल (1835-1880 ई.) से जयपुर मे कुट्टी का काम हो रहा है। कागज, चाक, मिट्टी फेवीकोल, गोंद आदि को गलाकार व पीसकर लुगदी बना ली जाती है। कोई आकृति बनाने के लिए उस वस्तु के साँचे या मॉडल मे तैयार लुगदी को दबा कर लगा दिया जाता है। सूखने पर फिनिशिंग देते हुए (खड़िया या चाइना क्ले से) इच्छित रंग कर दिया जाता है। कुट्टी से चौपाये पशु और पक्षी बनाये जाते है।

निर्माण कैप्सूल

- ब्लॉक प्रिंटिग (कपड़े पर हाथ की छपाई)-इस प्रिंटिग के लिए बाडमेर, बालोतरा, बगरू, सांगानेर, आकोला आदि स्थानों के छीपा जाति के लोग प्रसिद्ध है। सांगानेर के छीपे नाम देवी छीपे कहलाते है।
- बाड़मेर का अजरक प्रिंट (दोनों तरफ से प्रिंट) चित्तौड़गढ़ की जाझम छपाई व सांगानेर की सांगानेरी प्रिंट देश-विदेश में प्रसिद्ध है।
- जयपुर के बगरू प्रिंट में काला व लाल रंग विशेष रूप से प्रयुक्त होता है।
- जयपुर का लहरिया व पोचमा भी प्रसिद्ध है।
- **कैलाश जागोटिया**-भीलवाड़ा-क्लॉथ आर्ट के जन्म दाता।

ऊस्तांकला

ऊँट की खाल पर स्वर्ण मीनाकरी और मुनव्वत का कार्य 'ऊस्तां कला' के नाम से जाना जाता है। इस कला का विकास पदमश्री से सम्मानित बीकानेर के हिस्सामुद्दन उस्तां ने किया। ऊस्तां द्वारा बनाई गई कलाकृतियाँ देश-विदेश में प्रसिद्ध है। ऊँट की खाल से बनी कुप्पियों पर स्वर्ण दुर्लभ मीनाकारी का कलात्मक कार्य आकर्षक और मनमोह लेने वाला होता है। शीशियों, कुप्पियों, आइनों, डिब्बों, मिट्टी की सुराहियों पर यह कला उकेरी जाती है। बीकानेर का 'कैमल हाइड ट्रेनिंग सेंटर' ऊस्तां कला का प्रशिक्षण संस्थान है।

निर्माण कैप्सूल

- ऊँट की खाल पर सोने व चांदी की कलात्मक चित्रांकन व नक्काशी उस्तकला या मुनव्वती कहलाती है।
- बीकानेर का उस्ता परिवार इसके लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- **हिस्सा मुद्दीन उस्ता**-दुलमेरा, लुणकरनसर (बीकानेर) ऊंट की खाल पर स्वर्ण मीनाकारी के बेजोड़ कलाकार। 1986 में पदमश्री।

मीनाकारी

ज्वैलरी पर मीनाकारी के लिए जयपुर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान रखता है। जयपुर मे मीनाकारी की कला महाराजा मानसिंह प्रथम (1589-1614 ई.) द्वारा लाहौर से आई गई। परम्परागत रूप से सोने पर मीनाकारी के लिए काले, नीले, गहरे, पीले, नारंगी और गुलाबी रंग का प्रयोग किया जाता है। लाल रंग बनाने मे जयपुर के मीनाकार कुशल है। मीनाकारी का कार्य मूल्यवान, अर्द्धमूल्यवान रत्नों तथा सोने-चांदी के आभूषणों पर किया जाता है। मीनाकारी में फूल-पत्ती, मोर आदि का अंकन प्राय: किया जाता है। सोने के आभूषणों के अतिरिक्त चाँदी के खिलौनों व आभूषणों पर भी मीनाकारी की जाती है। नाथद्वारा भी मीनाकारी का प्रसिद्ध केन्द्र है। कोटा के रेतवाली क्षेत्र मे कांच पर विभिन्न रंगों से मीनाकरी का काम किया जाता है। बीकानेर और प्रतापगढ़ मे भी यह काम दक्षता के साथ किया जाता है।

पीतल पर मीनाकारी

- पीतल की घिसाई, पॉलिश और उस पर कलात्मक मीनाकारी का कार्य जयपुर व अलवर में किया जाता है।
- जोधपुर में पानी को ठण्डा रखने हेतु बादला नामक कलात्मक बर्तन बनाया जाता है, जो जस्ते से निर्मित होते हैं। इन पर कपड़े या चमड़े की परत चढाई जाती है। खूबसूरत रंगों तथा डिजाइनों में बने बादले बड़े सुंदर होते है।

निर्माण कैप्सूल

- जयपुर मे संगमरमर पर मीनाकारी का काम होता है।
- कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी करने के लिए बीकानेर के मीनाकार प्रसिद्ध है।

लाख का काम

सवाई माधोपुर, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) व इन्द्रगढ़ (बून्दी) लकड़ी के खिलौने व अन्य वस्तुओं पर लाख के काम के लिए प्रसिद्ध है। लाख से चूड़ियाँ, चूड़े, पशु-पक्षी, पेन्सिलें, पैन, काँच जड़ें लाख के खिलौने, बिछिया आदि तैयार किए जाते है।

निर्माण कैप्सूल

- राजस्थान में लाख की चूड़ियों का काम जयपुर, हिण्डौन एवं करौली में होता है। लाख की चूड़िया मोकड़ी कहलाती है।
- लाख के आभूषणों, खिलौनों और कलात्मक वस्तुओं का निर्माण जयपुर व उदयपुर में अधिक से अधिक होता है।
- जयपुर एवं जोधपुर में लाख से विभिन्न प्रकार की सजावटी चीजें, खिलौंने, मूर्तियां, अंगूठी गले का हार, झुमके, गुलदस्ते आदि बनाये जाते है। सर्वाधिक जयपुर।

चमड़े का कार्य

- कलात्मक सलमा सितारों और कशीदाकारी के उत्कृष्ट कार्य और हल्केपन के लिए प्रसिद्ध जयपुर और जोधपुर की नागरी और मौजड़ियां जूतियां प्रसिद्ध है।
- भीनमाल और जालौर की कशीदाकारी जूतियां पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। भरतपुर की नदबर्द तहसील की जूतियां भी प्रसिद्ध है।
- बड़ (नागौर) मे बनने वाली कशीदायुक्त जूतियों की एक परियोजना संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा यू.एन.डी.पी. के सहयोग से चलाई जा रही है।

टेराकोटा

पक्की मिट्टी का उपयोग करके मूर्तियाँ आदि बनाने की कला को टेराकोटा के नाम से जाना जाता है। लोक देवताओं की पूजा के साथ-साथ मिट्टी के खिलौने व मूर्तियाँ बनाने का काम पूरे प्रदेश मे वर्षो से चल रहा है। नाथद्वारा के पास स्थित मोलेला गांव इस कला का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। इसी प्रकार हरजी गांव (जालौर) के कुम्हार मामाजी के घोड़े बनाते है। मोलेला तथा हरजी दोनों ही स्थानों मे कुम्हार मिट्टी में गधे की लीद मिलाकर मूर्तियाँ बनाते है व उन्हें ताप पर पकाते है।

निर्माण कैप्सूल

- मिट्टी की मूर्तियों और बर्तन को आग में पकाकर बनाने की कला को टेराकोटा कहते है। राजसमंद में सर्वाधिक ।
- टेराकोटा की मूर्तियां बनाने में राजसमंद जिले की नाथद्वारा तहसील का **मोलेला गांव** प्रसिद्ध है।
- मिट्टी के खिलौने, गुलदस्ते, गमले तथा पशु-पक्षियों की कलाकृतियों के काम के लिए नागौर जिले का बनूरावतां गावं प्रसिद्ध है।
- रंगमहल से स्वीडन की पुरावेता श्रीमती हन्नारिड़ को एक मिट्टी का कटोरा मिला है जो वर्तमान में स्वीडन के संग्रहालय में सुरक्षित है।
- **नोह (भरतपुर)** में एक मिट्टी का ढक्कन मिला है, जिसके मध्य भाग पर एक पक्षी की आकृति बनी है ऐसा समुचे भारत में कहीं उपलब्ध नहीं।

  मालव नगर (टोंक) में शुंगकालीन खडिया मिट्टी से निर्मित देवी का फलक मिला।

मूर्तिकला

- राजस्थान में व्यवस्थित ढंग से मूर्तिकला का विकास मौर्यकाल से आरम्भ।
- **डुंगरपुर संग्रहालय** में गुप्तोतर कालीन शैव मूर्तियों का बाहुल्य।
- **अर्थूना** (बांसवाड़ा) मूर्तियों का प्रमुख केन्द्र 11 वीं -12 वीं शताब्दी में परमार वंश की राजधानी।
- **आभानेरी (दौसा)** गुप्त कालीन मूर्तिया मिली।
- मूर्तिकला के आरम्भिक विकास का केन्द्र-भरतपुर
- मध्यमिका (चित्तौड़) मूर्तिकला का उन्नत केन्द्र था।
- सन् 1933 ई. भरतपुर के नोह में जाख बाबा (यक्ष प्रतिमा) की विशाल मूर्ति मिली।
- **नृत्य गणेश मूर्ति (नीलकण्ठ)** अलवर में खड़े गणेश मुर्ति कोटा में बाजणा गणेश मूर्ति सिरोही में हेरम्ब गणपति (शेरपर सवार) बीकानेर में स्थापित है।
- **तिमनगढ़ (करौली)** शिल्प कला व मूर्तिकला की दृष्टि से समुह स्थल।
- पत्थर की मूर्तियां बनाने के लिए डूंगरपुर व तलवाड़ा (बांसवाड़ा) में सोमपुरा जाति के मूर्तिकार प्रसिद्ध है। यहां की अधिकतर मूर्तियां पारेवा पत्थर से बनती है।
- पत्थर के कलात्मक खिलौने बनाने में गलियाकोट (डूंगरपुर) प्रसिद्ध है।
- अलवर जिले का थानागाजी भी मूर्ति शिल्प का प्रसिद्ध केन्द्र है।

संगमरमर की मूर्तियां

- संगमरमर की मूर्तियों और कलाकृतियों के लिए जयपुर के लिए प्रसिद्ध है।
- संगमरमर पर मीनाकारी का काम जयपुर में होता है।
- संगमरमर पर पच्चीकारी का कार्य भीलवाड़ा में होता है।
- संगमरमर का प्रमुख केन्द्र मकराना है।
- जयपुर के अतिरिक्त अलवर के निकट किशोरी ग्राम में भी संगमरमर की मूर्तियां बनती है।

हाथी दांत की वस्तुएं

- हाथी दांत के खिलौने, मूर्तिया एवं अनेक कलात्मक वस्तुएं राज्य में जयुपर, उदयपुर, भरतपुर, मेड़ाता और पाली में बनाई जाती है।
- जोधपुर में हाथी दांत से निर्मित काली, हरी और लाल धारियों की चुड़ियां एवं आभूषण बनाये जातू है। उदयपुर व पाली में भी हाथी दांत की चुड़ियां बनती है।
- राजस्थान में राजपूत महिलाओं को विवाह के समय हाथी दांत से बना चुड़ा पहनाए जाने की प्रथा है।
- जयपुर स्थित आमेर महल के सुगाह मंदिर में चंदन के किवाड़ों पर हाथी दांत की पच्चीकारी का काम 17 वीं शताब्दी का माना जाता है।

निर्माण कैप्सूल

- **जड़ाई**-जयपुर कीमती और अर्द्ध-कीमती पत्थरों की कटाई और जड़ाई के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ नगो की कटाई व जड़ाई पर मुगल और राजपूत शैली का प्रभाव है। अधिकतर जड़ाई का काम मुस्लिम जाति के कारीगरो के हाथ में है। इनका कौशल प्रशंसनीय है।

- **बादले**- जोधपुर के पानी भरने के बर्तन जो मैटल के बने होते है और जिन पर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ाई जाती है, बादले कहलाते है। खूबसूरत रंगो और डिजाइन मे बने बादले आकर्षक होते है।
- **फतगिरी**- फौलाद की वस्तुओं पर सोने के पतले तारों की जड़ाई को **फतगिरी** कहलाती है। यह दमिश्क से पंजाब लाई गई और पंजाब से मानसिंह प्रथम इसे जयपुर लाये। जयुपर व अलवर की कोफतगिरी प्रसिद्ध है।
- **तहनिशा** के काम में फौलाद की वस्तुओं पर डिजाइन को गहरा खोद कर उसमें पतला तार भर दिया जाता है।
- सोने आभूषणों में कीमती पत्थरों की जड़ाई की कला **कुंदन** कहलाती है। जयपुर की कुंदन कला प्रसिद्ध है।
- **पेपर मैशी या कुट्टी**- कागज की लुगदी बनाकर उससे कलात्मक वस्तुए बनाना **पेपर मैशी या कुट्टी** कहलाता है।
- **तारकशी**- नाथद्वारा में चांदी के बारीक तारों से विभिन्न आभूषण एवं कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती है। यह कला **तारकशी** कहलाती है।
- **मिरर वर्क**- बाड़मेर में कपड़े पर शीशे की छोटे-छोटे टुकड़ों को सिलने का काम किया जाता है, यह **मिरर वर्क** कहलाता है।
- कठपुतली का कार्य उदयपुर में किया जाता हैं
- बीकानेर का नापासर ऊनी लोई के लिए प्रसिद्ध है।
- राज्य में हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए चार शिल्प ग्रामों की स्थापना की गई है। पहला शिल्प ग्राम उदयपुर में बनाया गया। दूसरा शिल्प ग्राम पाल (जोधपुर) में बनाया गया, तीसरा शिल्प ग्राम 2002 में पुष्कर में तथा चौथा शिल्प ग्राम 2003-04 में सवाई माधोपुर में बनाया गया है।
- भीलवाड़ा में **कांसी के बर्तन** व ब्यावर में सूघनी नसवार बनती है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम तथा खादी व ग्रामोद्योग आयोग के प्रयासों से सांगानेर (जयपुर) में **हस्तशिल्प कागज राष्ट्रीय संस्थान** की स्थापना की गई है।
- हस्तशिल्पियों को उनके उत्पादों का पूरा मूल्य मिल सके इसके लिए जोधपुर में **राज्य का पहला अरबन हाट** स्थापित किया गया है।
- **थड़ा**-यह भी किसी मृत व्यक्ति की स्मृति में बनाया जाता है। इस तरह के स्मारक में मृत व्यक्ति की नियमित पूजा पाठ की व्यवस्था होती है, उसे व्यक्ति को देवयोनि में माना जाता है।
- पानी के बड़े संग्रह कक्ष को **झालरा** कहते है। इसमें पानी संग्रहित होता है, जो बावड़ीनुमा होता है।
- तैतीस करोड़ देवताओं की साल (मण्डौर, जोधपुर) का निर्माण महाराजा अजीतसिंह के समय एक ही चट्टान को काटकर किया गया इसे वीरों की साल भी कहते है।

नाम	**स्थान**
पेपरमेशी (कुट्टी का नाम)	जयपुर
मीनाकारी एंव कुंदन	जयपुर
लहरिया व पोचमा	जयपुर
पत्थर की मूर्तियां	जयपुर
कोफतगिरि व तहनिशां	जयपुर
पाव रजाई	जयपुर
खेस	चौमूं (जयुपर)
ब्ल्यू पॉटरी	नेवटा-सांगानेर (जयपुर)
चमड़े की मोजडिया	जोधपुर, जयपुर, नागौर
गलीचे	जयपुर, बीकानेर
सुनहरी टैराकोटा	बीकानेर
पापड़, भुजिया	बीकानेर
उस्ताकला	नागौर
दरिया	टांकला (नागौर)
नांदणे (घाघरे पर छापी फड़)	भीलवाड़ा
फड़ चित्रण	शाहपुरा (भीलवाड़ा)
रमकड़ा	गलियाकोट (डूंगरपुर)
ऊनी कंबल	जैसलमेर
ऊनी बरड़ी व लोई	जैसलमेर
खेसले	लेटा (जालौर)
अजरख व मलीर प्रिंट	बाड़मेर
थेवा कला	प्रतापगढ़
लकड़ी की कांवड़	बस्सी (चित्तोड़गढ़)
जाजम प्रिंट	आकोला (चित्तौड़गढ़)
मसूरिया व कोटज्ञ डारिया	कैथून(कोटा) व मांगरोल
बादला व मोठड़े	जोधपुर
मलमल व जाटा	मथानियां (जोधपुर)
गरासियों की फांग (ओढ़नी)	सोजत (पाली)
सूघनी नसवार	ब्यावर
पिछवाईयाँ	नाथद्वारा
तारकंशी के जेवर	नाथद्वारा
मिट्टी के खिलौने	मोलेला (नाथद्वारा)
गोटा किनारी	खण्डेला (सीकार)
पेचवर्क व चटापटी	शेखावाटी
कागजी टैराकोटा	अलवर
कठपुतलियां	उदयपुर
पशु-पक्षियों की कलाकृति	बू-नरावंता (नागौर)
गोल्डन पेंटिग	कुचामन एवं मोरठा (नागौर)
काष्ठ पर कलात्मक शिल्प	जेठाना (डूंगरपुर)
कशीदायुक्त जूतियां	बड़ू (नागौर)
अलागीला कारीगरी	बीकानेर
मलमल	तनसुख,मथानिया, (जोधपुर)
पत्थर मूर्तिकला	तलवाड़ा (बांसवाड़ा)
चंदन (मलयागिरी) की लड़की पर खुदाई	चुरू

लोककला

पाषाणयुगीन मानव ने शिकार के लिए पत्थर के हथियार बनाये, उसके बाद उसने मिट्टी के बर्तन, खिलौने, मनके, ईटें, ताँबे की कुल्हाडियाँ आदि आपनी जरूरत एवं रोजमर्रा के उपकरणों का निर्माण किया। बिना किसी मशीन या नक्शें के शुरू किये गये ये कार्य केवल उसके दक्ष हाथों का ही कमाल था। चांदी के आहत सिक्के जो बिना किसी नाप-जोख के बने, के प्रमाण हमें मिलते है। बसन्तगढ़ की कांस्य प्रतिमा राजस्थान मे धातु के काम की प्राचीनतम प्रमाण समझी जाती है। विराट नगर के बौद्ध चैत्य मे मौर्यकाल के छब्बीस लकड़ी के स्तम्भ लगे हुए थे, जो राजस्थान मे लकड़ी का प्राचीनतम काम था। ये सब राजस्थान मे हस्तकलाओं की प्राचीनता साबित करते है।

वर्तमान मे राजस्थान मे कपड़े की बुनाई, पत्थर की मूर्तियाँ, जवाहरात की कटाई, मीनाकारी, चाँदी के आभूषण, बंधेज, हाथी दाँत व चन्दन की कुटाई, लकड़ी की कारीगरी, गलीचा बुनाई, पीतल व धातु की कारीगरी, मिट्टी के बर्तन, लाख का काम, चमड़ें की जूतियाँ, चित्रकला आदि सभी क्षेत्रों मे हस्तकलाओं का कार्य होता है।

पट चित्र या फड

- भीलवाड़ा जिले का शाहपुरा कस्बा राजस्थान की परंपरागत लोक चित्रकला 'फड़' के कारण राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है।
- 2006 मे फड़ चित्रकार श्रीलाल जोशी पद्मश्री से नवाजे जा चुके है। जोशी ने शाहपुरा की फड़ चित्रकला को वर्तमान मे नई पहचान दी है।
- मोटे सूती कपड़ें (रेजा) पर गेहूँ या चावल के मांड में गोंद मिलाकर कलफ पर पाँच या सात रंगों से बनी फड़ ग्रामीणों के सरलतम विवरणात्मक, क्रमबद्ध कथन का सुंदर प्रतीक है।
- मानवाकृतियाँ, पुश-पक्षी, प्रकृति चित्रण आदि का संयोजन कर उनमें रंग भरा जाता है। सर्वप्रथम सिन्दूरी रंग शरीर मे, फिर हरा व लाल रंग कपड़ों में, भूरा रंग वास्तु निर्माण में एवं अंतिम रेखाएँ काले रंग से की जाती है।
- चित्र संयोजन में प्रमुख आकृति को सबसे बड़ा बनाकर प्रधानता दी जाती है। अन्य आकृतियाँ उसके अनुपात में छोटी बनाई जाती है। छोटी आकृतियाँ गतिशील एवं जीवंत दिखाई देती है।
- सभी चेहरों पर तीखी, लम्बी नाक, बड़ी बीजनुमा आँखें, छोटा माथा, दोहरी ठुड्डी, मुड़ी हुई पतली मूँछें होती है।
- रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग भावाभिव्यक्ति में सहायक है- देवियाँ नीली, देव लाल, राक्षस काले, साधु सफेद या पीले रंग से बनाये जाते है। सिन्दूरी व लाल रंग शौर्य व वीरता के द्योतक है।
- फड़ नागौर, बीकानेर, जैसलमेर आदि क्षेत्र के राजपूत, गुर्जर, जाट, कुंभकार, बलाई आदि जातियो के चारण व भोपों के लिए जीविकोपार्जन का साधन है। इस कला को जीवित रखने और लोकप्रिय बनाने में चित्रकरों के साथ-साथ भोपों की भी भूमिका है।
- भोपे फड़ को लकड़ी पर लपेट कर गांव-गांव जाकर पारंपरिक वस्त्रों में रावणहत्था या जंतर वाद्य यंत्र की धुन के साथ कदम थिरकाते हुए वाचन करते है।
- इस परंपरा मे लोक नाट्य, गायन, वादन, मौखिक साहित्य, चित्रकला व लोकधर्म का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

निर्माण कैप्सूल

- राजस्थान में चित्रों के माध्यम से कथा कहने की विधा को फड़ कहा जाता है। फड़ चित्रण कपड़े या कैनवास पर किया जाता है।
- फड़ बाचने वाले भोपा कहलाते है। फड़ को भोपा युगल मिलकर गाते है। पाबूजी व देवनारायण की फड़ प्रसिद्ध है।
- भीलवाड़ा जिले में स्थित शाहपुरा फड़ या फड़ पेंटिग का प्रधान कार्य स्थल है। इसमें मुख्यत: लाल व हरा रंग काम हाता है।
- शाहपुरा का जोशी परिवार फड़ पेटिंग में पारंगत है नाथद्वारा में कृष्ण प्रतिमा के पीछे दीवारों पर लगाये जाने वाले कपड़े पर श्री कृष्ण की लीलाओं का चित्रण किया जाता है। प्रतिमा के पीछे लगाने के कारण ये पिछवाइयां कहलाती है।

पाने

राजस्थान मे विभिन्न पर्व, त्योहारों एवं मांगलिक अवसरों पर कागज पर बने देवी-देवताओं के चित्रों को प्रतिष्ठापित किया जाता है, जिन्हें 'पाने' कहा जाता है। गणेशजी, लक्ष्मीजी, रामदेवजी, गोगाजी, श्रवण कुमार, तेजाजी, राम, कृष्ण, शिव, शिव-पार्वती, धर्मराज इत्यादि के पाने शुभ अवसरों पर प्रयुक्त किए जाते है। ये पाने सस्ते होते है, जिन्हें ग्रामीण खरीदकर समयनुसार प्रयुक्त करते है। पानों को सामान्य कागज पर पोस्टर रंगों का प्रयोग करते हुए तैयार किया जाता है। घर में सुख-समृद्धि व विवाह के अवसर पर गणेशजी के पाने का प्रयोग करते है। दीपावली पर लक्ष्मीजी का पाना प्रयोग मे लाया जाता है। पानों मे गुलाबी, लाल, काले रंग का मुख्यत: प्रयोग किया जाता है।

काष्ठ कला (कावड़ व बेवाण)

राजस्थान में खाती या सुथार जाति के लोग लकड़ी का कार्य करने मे सिद्धहस्त होते है। ये लकड़ी का घरेलू सामान, कठपुतलियाँ, पूजन सामग्री रखने, मांगलिक अवसरो पर काम में आने वाली वस्तुएँ व खिलौने बनाते है। चित्तौड़ जिले का **'बस्सी'** गांव लकड़ी की कलात्मक वस्तुओं के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। बस्सी मोर चौपड़ा (श्रृंगार दान), बाजोट, गणगौर, हिंडौल एवं लोक नाट्यों में प्रयुक्त विभिन्न वस्तुएँ- खांडा, तलवार, मुखौटे, विमान एवं कावड़ (मंदिरनुमा आकार) निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। इनमें कावड़ सबसे कलात्मक होती है। कावड़ एक मंदिरनुमा काष्ठ कलाकृति होती है। जिसमें कई द्वार बने होते है। सभी द्वारों पर चित्र अंकित रहते है। कथावाचन के साथ-साथ कावड़ के द्वार खुलते जाते है। सभी द्वार खुल जाने पर राम-लक्ष्मण व सीता की मूर्तियाँ दर्शित होती है। कावड़ पूरी लाल रंग जाती है व उसके ऊपर काले रंग से पौराणिक कथाओं को चित्रित किया जाता है। कावड़ में मुख्यत: रामायण, महाभारत, कृष्ण-लीला से संबंधित घटनाओं का चित्रण होता है।

बस्सी के काष्ठ कलाकार **'बेवाण'** बनाने मे भी निपुण है। 'बेवाण' भी एक काष्ठ मंदिर होता है, जो सामने से खुला और तीन ओर से बंद होता है। अनन्त चतुर्दशी व झूलना एकादशी पर राम, कृष्ण व विष्णु के छोटे विग्रह को बेवाण में विराजमान करके उनका जुलूस निकाला जाता है। बेवाण निर्माण एवं इन पर लकड़ी की खुदाई कलात्मक होती है।

निर्माण कैप्सूल

- चित्तौड़गढ़ के **बस्सी गांव** में लकड़ी की कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती है।
- डूंगरपुर का **जेठाना गांव** लकड़ी पर कलात्मक शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।
- जोधपुर के पाल शिल्प ग्राम में राजसिकों की सहायता से वुड सीजनि-प्लाण्ट लगाया गया है।

माण्डणा

'माण्डणा' से तात्पर्य अलंकृत करने से है। माण्डणे घर की देहरी, चौखट, आंगन, चबूतरा, चौक, पूजन स्थल, दीवारों आदि को अंलकृत करने के लिए बनाये जाते है। गेहूँ, चूने या खड़िया से गोबर लिपी सतह पर विभिन्न असवरों पर अलग-अलग माण्डणे बनाये जाते है। विवाह के अवसर पर गणेशजी, लक्ष्मी जी के पैर, स्वस्तिक आदि शुभ प्रतीकों के साथ-साथ सामान्य दिनों में गलीचा, मोर-मोरनी, गमले, गलियाँ, बन्दनवार, बच्चे के जन्म पर गलीचा, फूल, स्वस्तिक, रक्षा बंधन पर श्रवण कुमार, गणगौर पर मिठाई, घेवर, लहरिया, तीज पर भी घेवर, लहरिया, चौक फूल, होली और दीपावली पर चंग, ढफ, ढोलक, स्वस्तिक, सूर्य, चन्द्रमा, दीपक, थाली, पान, सुपारी, मिठाइयाँ आदि माण्डणे बनाये जाते है।

माण्डणे अत्यन्त सरल, अमूर्त्त व ज्यामितीय शैली का सुंदर सम्मिश्रण है। वृत्त वर्ग आदि ज्यामितीय आकारों मे बिंदु, आड़ी, तिरछी रेखाओं से आलंकारिक रूप प्रदान करते है। इनका उद्देश्य अलंकृत करना तो हैं ही इसके साथ ही ये स्त्रियों के हृदय मे छिपी भावनाओ, भय व आकांक्षाओं को भी दर्शाते है।

सांझी

सांझी श्राद्ध पक्ष में बनाई जाती है। कुँवारी लड़कियाँ सफेदी से पुती दिवारों पर गोबर से आकार उकेरती है। तथा साँझी को माता पार्वती मानकर अच्छे घर, वर के लिए कामना करती है। प्रथम दिन से दस दिन तक एक या दो प्रतीक ही प्रतिदिन बनाए जाते है, किंतु अंतिम पाँच दिनो मे बड़े आकारों मे साँझी बनाई जाती है, जिसे संझ्या कोट कहते है। राजस्थान मे प्रत्येक जगह साँझी के क्रम मे अंतर रहता है। कई जगह पहले दिन सूर्य, चन्द्रमा, तारे, दूसरे दिन पाँच फूल, तीसरे दिन पंखी, चौथे दिन हाथी सवार, पाँचवें दिन चौपड़, छठे दिन स्वस्तिक, सातवें दिन घेवर, आठवे दिन ढोलक या नगाड़े, नवें दिन बन्दनवार व दसवें दिन खजूर का पेड़ बनाया जाता है। अंतिम पाँच दिन की संझ्याकोट में बीचो-बीच सांझी माता बड़े आकार की व चारों ओर मानव, पशु-पक्षी आकृतियाँ बनाई जाती है। कहीं-कहीं पाँच पछेटा, छबड़ी, घड़ा, कलश, मोर-मोरनी, सीढ़ी, हनुमान, थाल, दोना, फेनी, घेवर, जलेबी भी बनाई जाती है। ये केवल अलंकरण है। इनका कोई खास महत्व नहीं है। इनका आकार जड़ व गतिहीन होता है, किंतु इनमें भित्ति चित्र की विशेषताएँ निहित होती है।

गोदना

किसी तीखे औजार से शरीर की ऊपरी चमड़ी खोदकर उसमें काला रंग भरने से चमड़ी में पक्का निशान बन जाता है, जिसे गोदना कहा जाता है। अहीर, गुवारी, गूजर, रेबारी, चांगल, सांसी, भांभी, कसाई, बनजारा, खटीक, कालबेलिया आदि जातियों की महिलाएँ गोदना गुदवाने मे अधिक रूचि रखती है। पूर्व मे बबूल का काँटा या सुई का प्रयोग गोदने के लिए किया जाता था। वर्तमान मे बिजली के औजार द्वारा गोदना खुदवाया जाता है। इनमें काले रंग के लिए कोयला, राख, जली हुई लकड़ी या कालिख को आक के पत्तों के रस या तिल के तेल के साथ मिलाकर चमड़ी मे भरते है।

गोदना सौंदर्य के साथ अंधविश्वासों से भी जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि अनगुदा शरीर असुरक्षित होता है। ग्रामीण स्त्रियाँ चेहरे पर सौंदर्य के लिए माथें, भवों, नाक के आस-पास, ठोड़ी, गाल, गार्दन व आँखों के दोनो ओर रेखाओं व बिंदुओं के द्वारा विभिन्न अलंकरण बनवाती है। छाती, गर्दन, पीठ, पेट, कूल्हें, जांघ, टाँग, टखने, बाहें, कलाई, हथेली के पीछे अंगुलियों पर भी विभिन्न अलंकरण बनवायें जाते है। गोदने के अलंकरण जाति विशेष व रूचि पर आधारित होते है। कुछ स्त्रियाँ गोदने मे केवल चित्र गुदवाती है तो कुछ केवल नाम। (ग्रामीण क्षेत्रों मे गोदना गुदवाकर देह सज्जा करना एक परंपरा बन गई है।)

भित्ति-चित्रण

- **चेजारे**-भवन निर्माण में संलग्न शिल्पियों को कहा जाता है जो प्राय: भित्ति चित्रण का कार्य भी करते है। प्राय: कुम्हार जाति के।
- भित्ति चित्रण का कार्य सर्वाधिक शेखावटी क्षेत्र में, जिसमें लोक जीवन की झांकी सर्वाधिक देखने को मिलती है।
- ऑपन आर्ट गैलरी -शैखावटी को
- रियासतों में भित्ति चित्रण की दृष्टि से कोटा-बुन्दी क्षेत्र सर्वाधिक विकसित रहा।
- भित्ति पर सौन्दर्य और सृजन की दृष्टि से किया हुआ नानारूपी अतंकरण भित्ति चित्रण कहलाता है।
- रियासतों में भित्ति चित्रिण के मुख्य विषय तत्कालीन राजसी वैभवपूर्ण जीवन, महफिल, उद्यान, विहार, रनिवास, प्रेमलीला, धार्मिक चित्र, शिकार व युद्ध के दृश्य, लोक देवताओं एवं प्रेमाख्यानों एवं नायिकाओं की विभिन्न मुद्राओं का चित्रण तथा राधाकृष्ण की लीलाएं रही है।
- शेखावटी के भित्ति चित्रों में लोक जीवन की झांकी सर्वाधिक देखने को मिलती है।
- शेखावटी के नवलगढ़, चिड़ावा, रामगढ़ फतेहपुर, सरदार शहर, मंडावा आदि भित्ति चित्रण के प्रमुख केन्द्र।
- **देवकी नदन शर्मा**-अलवर। मास्टर ऑफ नेचर एण्ड लिविंग ऑब्जेक्ट्स के नाम से प्रसिद्ध। पशुपक्षी चित्रण एवं भित्ति चित्रण में विशेष ख्याति। परम्परावादी चित्रकार थे।
- **जोगीदास की छतरी (उदयपुरवाटी)**- भित्ति चित्रांकन परम्परा का प्राचीनतम उदाहरण,चित्रकार देवा।

भित्ति चित्रण की प्रमुख विधियाँ -

फ्रेस्कों बुनों :- ताजी पलस्तर की हुई नम भित्ति पर किया गया चित्रण। राजस्थान में इस पद्धति को **अरायशा** या **आलागीला** कहते है। शेखावटी में अरायशा को पणा कहते है।

फ्रास्कों सेको चित्रण:- इस विधि में पलस्तर की गई मिट्टी को पूर्ण रूप से सूखने के बाद चित्रण कार्य किया जाता है।

- **शेखावटी के भित्ति चित्रण** में कत्थई, नीले व गुलाबी रंग की प्रधानता है। चित्रकार बालुराम, चेजारा, जयदेव, तनसुख। बलखाती बालो की लट का एक ओर अंकन स्त्री चित्रण में शेखावटी की मुख्य विशेषता है।
- भित्ति तैयार करने हेतु राहोली का चूना अराइशी चित्रण के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। अकबर और जहांगीर की भित्ति चित्र कला में रूचि, उन्हीं के समय आलागीला पद्धति इटली से भारत आई।
- **मथैरना कला**- इस कला में धार्मिक स्थानों एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित विभिन्न देवी-देवताओं के आकर्षक भित्ति चित्र, ईसर, गणगौर आदि का निर्माण कर इन्हें आकर्षक रंगों से सजाया जाता है। बीकानेर क्षेत्र में मथैरना कला अधिक प्रचलित है।

राजस्थान में संगीत

ध्रुपद शैली-ध्रपुद की चार मुख्य धाराऐं मानी जाती है-

- **गोहरावाणी**-तानसेन की गायन शैली जो स्वामी हरिदास से संबंधित है।
- **डागुर वाणी**-यह डांग क्षेत्र (करौली) के निवासी ब्रज चंद की वाणी (प्रवर्तक) बहराम खां डागर ने प्रसिद्ध दिलाई।
- **नोहरवाणी**-इसे नोहर (हनुमानगढ़) के निवासी श्रीचंद की परम्परा मानी जाती है।
- **खण्डार वाणी**-खण्डार (सवाई माधापुर) के सम्मोहन सिंह इसके प्रवर्तक माने जाते, तानसेन की पुत्री सरस्वती का विवाह सम्मोहन सिंह के पुत्र मिश्रीसिंह से।

संगीत घराने एवं कलाकार

- **जयपुर घराना**-जन्मदाता-मनरंग (भूपत खां) ख्याल गायन शैली का घराना। मोहम्मद अली खां कोठी वाले ने प्रसिद्धि दिलवाई (मनरंग) के पोते) मनरंग दिल्ली घराने के प्रवर्तक सदारंग के पुत्र।
- **पटियाला घराना**-प्रवर्तक फतेह अली एवं अली बख्श (आलिया-फतू) इसे जयपुर का उपघराना कहते।
- **मेवाती घराना**-उस्ताद घग्घे खां प्रवर्तक (जोधपुर के राज्याक्षित) इसे ग्वालियर घराने की शाखा भी मानते है। जसराज इसी घराने से संबधित है। जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के दरबारी गायक।
- **अल्लादिया खां घराना**-प्रवर्तक जयपुर के अल्लादिया खां। किशोर अमोणकर इसी घराने की प्रसिद्ध गायिक।
- **अतरौली घराना**-प्रवर्तक साहब खां। जयपुर घराने की शाखा। रूलाने वाले फकीर के नाम से प्रसिद्ध मानतोल खां इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ।
- **डागर घराना**- प्रवर्तक बहराम खां डागर। रामसिंह I के दरबारी गायक। जहीरूद्दीन एवं फैयाजुद्दीन डागर, घराने के प्रसिद्ध ध्रुपद। गायक इन्होने ध्रुपद मे जुगलबंदी की परम्परा स्थापित कर ध्रुपद को नया रूप दिया।
- **सोनिया घराना (जयपुर)**-प्रवर्तक सूरतसेन (तानसेन के पुत्र)
- **उदयशंकर**-मूल निवासी-उदयपुर। कत्थक एवं बेले नर्तक। राधा कृष्ण व हिन्दू मैरिज दो नृत्यनाटिकाएं लिखी इन्द्र नृत्य की रचना की जो अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ।
- **रविशंकर**-उदयपुर। उदयशंकर के छोटे भाई। विश्व प्रसिद्ध सितार वादक। अमेरिका का प्रसिद्ध संगीत पुरस्कार ग्रेमी पुरस्कार प्राप्त कर चुके है।
- **प.विश्व मोहन भट्ट**-जयपुर के विश्व प्रसिद्ध सितार वादक। गौरीम्मा नामक नई रोग का विकास किया। 1994 ई. में स्पेनिश गिटार वादक राईकुडर के साथ जुगल बंदी कर कॉम्पेक्ट डिस्क A Meeting by the River पर प्रसिद्ध ग्रेमी पुरस्कार मिला। पं. विश्वमोहन भट्ट ने पश्चिमी गिटार में 14 तार जोड़कर इसे मोहन वाणी का रूप दिया जो वीणा सरोद एवं सितार का समिक्षण। इन्हे अमेरिका के मैरीलैण्ड राज्य की मानक नागरिकता दी गई है।
- **उमा शर्मा**-जयपुर। प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना।
- **श्री दुर्गा लाल**-जयपुर। जयपुर शैली के कत्थक कलाकार। 1990 में पद्म श्री प्रदान किया गया।
- **पण्डित बाबूलाल**-जयपुर। कत्थक कलाकार (संगीत) राम जोशी, नवरंग, बूंद जो बन गई मोती, तूफान और दिया। झनक पायल बाजे, आदि फिल्मों में कार्य किया।
- **प्रेरणा श्रीमाली**-बांसवाड़ा प्रसिद्ध कत्थक कलाकार। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2010)।
- **कोमल कोठारी**-कपासन (चित्तौड़) देश के शीर्ष स्तर के लोककला मर्मज्ञ। रूपायन संस्थान, बोरूदा (जोधपुर) के निदेशक रहे। 1983 पद्म श्री 2003 पद्मभूषण तथा 2004 में राजस्थान का प्रथम राव सीहा पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य

लोक वाद्यों के चार प्रकार है-

- **धन वाद्य**
- **अवनध वाद्य**
- **सुषिर वाद्य**
- **तत् वाद्य**

धनवाद्य

वे वाद्य जो धातु से निर्मित होते है जिनको आपस में टकराकर या डण्डे की सहायता से बजाया जाता है। धन वाद्य यंत्र कहलाते है।

- **घुंघरू**-पीपल या कांसे के गोल वाद्य। लोक नर्तकों या कलाकारों का प्रिय वाद्य यंत्र नृत्य करते समय पैरों में बांधा जाता है।
- **करताल**-नारद मुनि का वाद्य यंत्र। युग्म साज। दो चौकोर लकड़ी के टुकड़ों के बीच में पीतल की छोटी-छोटी गोल तश्तरियाँ लगी रहती है। साधु संत भजनों के समय बजाते है बाड़मेर व पाली जिलों में गैर नृत्य में प्रयोग।
- **रमझौल**-लोक नर्तकों के पावों में बांधी जाने वाली घुघरूओं की पट्टी होली के अवसर पर होने वाले नृत्य, उत्सव तथा गैर नृत्यों में इसका प्रयोग उदयपुर जिले में भील चक्राकार नृत्यों में इसका प्रयोग करते है। गौड़वाड़ क्षेत्र के लोक नर्तक समर नृत्य करते समय बजाते है।
- **लेजिम**-गरासिया जाति के लोगों का वाद्य-यह बांस का धनुषाकार टुकड़ा होता है, जिनके साथ लगी जंजीर में छोटी-छोटी गोलाकार पत्तियाँ होती है, जिसके हिलाने पर झनझनाहट की ध्वनि निकलती।
- **घण्टा (घड़ियाल)**- पीतल या अन्य धातु का गोलाकार वाद्य जिसे डोरी से लटकाकर हथोड़े या इसके अन्दर लटके हुए डण्डे से चोट कर बजाया जाता है। प्रयोग अधिकतर मंदिरों में किया जाता है।
- **श्रीमण्डल**-राजस्थान के लोक वाद्यों में बहुत पुराना लोक वाद्य। खड़े झाडनुमा इस वाद्य मे चांद की तरह के गोल-गोल छोटे-बड़े टंकोरे लटकते हुए रहते।
- वादन वैवाहिक अवसरों पर। तरंग वाद्य (दो पतली डंडी से बजाया जाता)
- **झालर**-कांसें या तांबे की मोटी चक्राकार प्लेट (तश्तरी) मंदिर में आरती के समय वादन किया जाता है।
- **चिमटा**-लोहे की दो पतली पट्टिकाओं से बना। साधु लोगों का वाद्य।

- **मंजीरा**-पीतल या कांसे से निर्मित कटोरी नुमा वाद्य। युग्म साज। डुंगरपुर क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य। तेरहताली नृत्य में प्रयोग। भक्ति कीर्तन में प्रयोग।
- **झांझ**-मंजीरे की बड़ी आकृति। शेखावटी का प्रसिद्ध वाद्य। शेखावटी में कच्छी घोड़ी नृत्य में प्रयोग। बड़े ढोंल व तासा के वादन के साथ प्रयोग।
- **डांडिया**-घुमर, गैर, गीदड़, तथा गरबा नृत्य में प्रयोग।
- **खड़ताल**-लकड़ी के छोटे-छोटे चिकने एवं पतले टुकड़ों से बना। बाड़मेर-जैसलमेर के लंगा-मांगणियारों का प्रमुख वाद्य। रोहिड़ा या खैर की लकड़ी से बना। खड़ताल का जादूगर सदीक खाँ मिरसी (झांपली, बाड़मेर) अन्य कलाकार-गाजी खाँ।
- **भरनी**-मिट्टी के भटके के संकरे मुंह पर कांसे की प्लेट ढंककर दो डंडियों की सहायता से बजाया जाने वाला वाद्य। राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र (अलवर भरतपुर) में सर्प के काटे हुए का लोक देवताओं के यहां इलाज करते समय बजाया जाता।
- **घड़ा**-छोटे मुंह की मिट्टी का घड़ा। फूंक मारकर तथा चोट देकर बजाया जाता है। अत: यह सुषिर वाद्य का रूप भी। बाड़मेर जैसलमेर में भक्ति संगीत के समय।
- **घुरालियौ**-पांच छ: अंगुल लम्बी बांस की खपच्ची सवे बना हुआ वाद्य, जिसके एक ओर छीलकर मुख पर धागा बांध दिया जाता है। इसे दांतों को बीच दबाकर धागे को ढील व तनाव देकर बजाया जाता। कालबेलिया व गरासिया जाति का प्रमुख वाद्य।

अवनध वाद्य

- ऐसे वाद्य जो चमड़े से मढ़कर बनाया जाता है, जिसे हाथ या डण्डे की सहायता से बजाया जाता।
- **चंग**-लकड़ी का बना गोल वाद्य। राजस्थान का अत्यन्त लोकप्रिय वाद्य होली के दिनों में बजाते। शेखावटी क्षेत्र में चंग नृत्य के समय।
- **घेरा**-चंग, डफ आदि वाद्यों के आकार का। अष्ट भुजाकर । मेवाड़ क्षेत्र के मुस्लमानों का प्रमुख वाद्य।
- **डफ (ढप)**-लोहे के गोले घेरे पर बकरे की खाल चढ़ाकर होली के अवसर पर।
- **कोटो** झालावाड क्षेत्र में विशेष रूप से बजाया जाता है।
- **खंजरी**-ढप का लघु आकार। आम की लकड़ी से बना।
- प्रचलन कालबेलियां व जोगियों में। निर्गुणी भजन-गीतों में।
- **नगाड़ा**-समान आकार के लोहे के दो कटोरीनुमा पात्रों का वाद्य। मेवाड़ में नाथद्वारा का नगाड़ा प्रसिद्ध। भैंस की खाल से मढ़ा जाता। मांगलिक अवसरों, उत्सवों आदि समय। बाड़मेर व शेखावटी में गैर तथा गीदड़ लोक नृत्यों के समय। रामकिशन सोंलकी (पुष्कर, अजमेर) प्रसिद्ध नगाड़ा वादक जो पिछले 50 वर्षों से कूचामनी ख्याल नाट य में नगाड़ा बजा रहे है।
- **दमामा (टामक/बम/बंव)** -लोक वाद्य में सबसे बड़ा। नगाड़ा की आकृति सा।
- युद्ध के अवसर पर विशेषत: अलवर-भरतपुर, सवाई माधोपुर में लोकप्रिय।
- **नौबत**-एक छोटी नगाड़ी व दूसरा बड़ा नगाड़ा जो प्राय: शहनाई के साथ बजाया जाता। बड़े नगाड़े को नर व छोटे को मादा। प्रयोग मंदिरो में व राजा महाराजाओं के महलों में।
- **तासा (ताशा)** - मिट्आी या लोहे के चपटे कटोरों पर बकरे की खाल मंढकर। गले में लटकाकर दो पतली डंडियों से बजाया जाता है। मुस्लिम समुदाय में ताजिया निकाते समय अधिकतर बजाया जाता है। परातनुमा वाद्य यंत्र।
- **ढोंलक**-आम, शीशम, सागवान, नीम, जामुन आदि की लकड़ी से बना वाद्य यंत्र।
- पाबूजी के माटे-मिट्टी के दो बड़े बर्तनों के मुख पर खाल चिपकाकर रस्सी से बांधकर यह वाद्य बजाया जाता।
- **ढोंल**-प्राचीन वाद्य। मांगलिक वाद्य। थाली व बांकिया के साथ बजाते। लोक नृत्यों में अधिक प्रचलन एक भाग नर व एक भाग मादा कहलाता ।
- **डेरू**-आम की लकड़ी से बना। डमरू का बड़ा रूप। लकड़ी की डंडी की सहायता से बजाते। भील व गोगाजी के भोपे बाजते।
- **मांदल**-मृदंग की आकृति का मिट्टी से बना लोक वाद्य। मुख्यत: आदिवासियों का वाद्य। मोलेला गांव (राजसमंद) में बनाया जाता। गवरी नृत्य में बजाते। हिरण व बकरे की खाल मढ़ी जाती जिसे जौ के आटे से चिपकाते। हसे शिव पार्वती का वाद्य मानते है।
- **मृदंग या पखावज**-बीजा, सुपारी और बड़ के पेड़ के तने से। रावल, भवाई जाति नाच में बजाते है। धार्मिक स्थलों पर बजाया जाता है।
- **डमरू**-भगवान शिव का वाद्य मदारी लोग अधिकर प्रयोग। छोटे रूप से डुग-डुगी कहते।
- **घौंसा**-आम या फारस की लकड़ी के घरे पर भैंस की खालस मढकर बनाया जाता है। लकड़ी कें मोटे डण्डों से बजाया जाता दुर्ग व बडे मंदिरों में।
- **ढाक**-डेरू के समान, वाद्य जो उससे कुछ बड़ा होता है एवं गुजर जाति के लोगों द्वारा पैरों पर रखकर बजाया जाता। कोटा, बूंदी एवं झालावाड़ क्षेत्रों में लोकप्रिय।
- **कमर**-लोहे की चद्दर को गोल कर चमड़े से मढ़कर बनाया गया वाद्य। जो अलवर, भरतपुर क्षेत्र में 3-4 व्यक्तियों द्वारा उसके चारों और खडे होकर दोनों हाथों में डंडों की सहायता से बजाया जाता है।

सुषिर वाद्य

- जो वाद्य फूंक कर बजाए जाते है, उन्हें सुषिर वाद्य कहते है।
- **बांसुरी** -यह वाद्य बांस की नलिका से निर्मित होने के कारण इस वाद्य का नाम बांसुरी पड़ा। पांच छेद वाली बांसुरी को **पावला।** छ: छेद वाली **रूला।** यह अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। वैदिक साहित्य, ऋग्वेद, उपनिषद, पुराण में उल्लेख। हरिप्रसाद चौरसिया प्रसिद्ध बांसुरी वादक है।
- **अलगोजा**-राजस्थान का राज्य वाद्य। सुपारी की नली का बना वाद्य (पाकिस्तान, से लकड़ी मंगाते) युग्म साज। मीणा आदिवासियों व ग्रामीणों में विशेष प्रचलन।
- जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, सवाई माधोपुर, टोंक।
- जयपुर के पद्मपुरा गांव के प्रसिद्ध कलाकार रामनाथ चौधरी नाक से बजाते। वीर तेजाजी की जीवन गाथा, डिग्गीपुरी का राजा, ढोला मारू नृत्य भवाई नृत्य में प्रयोग। चरवाहों का खानदानी वाद्य यंत्र।
- **शहनाई (नफीरी)**-सुषिर वाद्यों मे सर्वश्रेष्ठ। सुरीला व मांगलिक वाद्य। शीशम या सागवान की लकड़ी से निर्मित इसमें 8 छेद। नगाड़ों की संगत में बजाते। बिस्मिल्ला खां प्रमुख शहनाई वादक। इसे सुन्दरी कहते। चांद मोहम्मद खां (जयपुर)
- मेवाड़ की मांगीबाई प्रसिद्ध शहनाई वादक व मांड गायिका।
- **नड़**-कगौर वृक्ष की लकड़ी से। मंशक की आकृति। चरवाहों व भोपों की प्रमुख वाद्य। करणा भील प्रसिद्ध वादक।

- **पूंगी (बीन)**-छोटी लौकी के तुम्बे से बनी होती है। तुम्बे के निचले हिस्से में छेदकर दो नलियां लगाई जाती। कालबेलियां का वाद्य
- **मशक**-बकरी की पूरी खाल से बोरे या गुब्बारे की तरह का वाद्य यंत्र। कांख में दबाकर बजाते। भैरूजी के भोपे प्रयोग में लेते है। अलवर, सवाई माधोपुर में विशेष लोकप्रिय।
- **बांकिया**-पीतल का वक्रकार वाद्य यंत्र। सरगरों का खानदानी वाद्य शादी अवसरों पर प्रयोंग।
- **भूंगल (रणभेरी)**-मेवाड़ के भावाईयों की प्रमुख वाद्य भवाई नाट्य से पूर्व बजाया जाता है। गांव में खेल शुरू करने से पहले जनता को एकत्रित करने के लिए तथा युद्ध शुरू करने से पूर्व बजाते।
- **सतारा**-अलगोजा, बांसूरी शहनाई का समन्वित वाद्य। बांसुरी केर की लकड़ी से बनाई जाती (सतारा की) युग्म प्रत्येक में छः-छः छेद जैसलमेर बाड़मेर के जनजाति के लोग गड़रिए मेघवाल और मुस्लिम बाजते ।
- **मोरचंग** -लोहे का बना छोटा वाद्य। होठो के बीच रखकर बजाते रेगिस्तानी क्षेत्र में प्रचलित लंगा गायक इसे सारंगी व सतारा की संगत मे।
- नोट इसमें तार लगे होने के कारण तत् वाद्य का रूप माना जाता है।
- **कारणा**-तुरही से मिलता वाद्ययंत्र पीतल का 7-8 फीट लम्बा वाद्य। प्राचीन काल में रणक्षेत्र व राज्य दरबारों में। सबसे लम्बा वाद्य यंत्र। तुरही पीतल की बनी। दुर्गो व युद्ध स्थलों में प्रयोग आकृति चिलम की तरह।
- लम्बाई 4-5 फीट मध्यकाल मे यह वाद्य यंत्र।
- **नागफणी**-पीतल की सर्पाकार नली से बना। मंदिरों व साधु सन्यासिओं द्वारा प्रयोग।
- **मुरला (मुरली)**-यह पुंगी का परिष्कृत रूप जो नलीदार तुम्बे के नीचे चौड़े वाले भाग में दो बांस की नलियां फंसाकर बनाया जाता है। एक नली से ध्वनि दूसरी से स्वर। बाड़मेर-जैसलमेर में लगा जाति में लोकप्रिय।
- **सींगा**-हिरण, बारहसिंगा या भैसा के सींग से बना यह वाद्य होठों पर रखकर कंठ से उत्पन्न ध्वनि से बजाया जाता है जोगियों में लोकप्रिय।
- **सुरनाई**-शहनाई से मिलता जुलता वाद्य। शीशम, सागवान की लकड़ी से निर्मित। ढोली व लंगा जाति द्वारा विवाह व मांगलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला वाद्य। इसे लक्का, नफीरी व टोटो कहते।
- **घुरालियाँ**-इसे 5-अंगुल बांस की खपची से बनाया जाता है। इसे गरासिया कालबेलिया व अन्य आदिवासी जातियों की विशेषकर महिलायें बजाती है।
- कोटड़ा क्षेत्र के आदिवासियों द्वारा इसे **बांस का बाजा** कहते है।

तत् वाद्य

- जिन वाद्यों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति। इनको गज, अंगुलियों या मिजराफ की सहायता से बजाते है।
- **सारंगी**-तत् वाद्यों से सर्वश्रेष्ठ। सागवान तथा रोहिड़े की लकड़ी से। वादन गज की सहायता से बजाते। इसमे 9 तार। वादन पड़ के समय। पाबूजी डूंगरजी, जवाहरजी के भोपे बाजते।
- जन्तर-वीणा का प्रारम्भिक रूप। आकृति वीणा जैसी वादन गले में लटकाकर खड़े होकर। वादन बगड़ावत की कथा कहने वाले गुजर भोपे। नागौर, अजमेर, भीलवाड़ा में। मेवाड़ क्षेत्र में प्रचलन अधिक राजस्थान में गुजर भोपों का प्रचलित वाद्य। इसमें चार तार।
- **कमायचा**-शीशम, आम या रोहिड़ा की लकड़ी से बनाया जाता। सारंगी के समान लोक वाद्य। रेगिस्तान में मांगणियार जाति के पेशेवर गायक बजाते है। नाथपंथी साधु भी भर्तृहरि एवं गोपीचंद की कथा के गीत के साथ बजाते है। ईरानी वाद्य प्रमुख कलाकार-साकर खां।
- **भपंग**-कटे हुए तूबे से बना जिसके एक सिरे पर चमड़ा मढ़ा जाता है। डमरू की आकृति से मिलता वाद्य यंत्र प्रमुख वादक -जहूर खां मेवाती (भपंग का जादूगर) उमर फारूख मेवाती अन्य कलाकार अलवर जिले के जोगी जाति के लोग भपंग वाद्य यंत्र के साथ पाण्डुन कड़ा, राजा भतृहरि, भगत पूरणमल, हीरा रांझा एवं गोपापीर की लोक कथाएं गाते।
- **तन्दूराः**- इसे 'वेणों कहते। चार तार। कामड़ जाति के लोगों द्वारा प्रयोग।
चौतारा कहते। मिजराब से बजाते।
- **रबाजः**- कमायचे की आकृति का/सारंगी की आकृति का। अंगुलियों के नाखूनों से वादन। मारवाड़ के रावल जाति के लोग 'रम्मत लोक नाट्य' में
- मेवाड़ के क्षेत्र की राव तथा भाट जीमन द्वारा बजाया जाता है। सात तार। पाबूजी की लोक गाथा गाने वाले नायक या भील' जाति के लोगों द्वारा
- **रबाबः**- सारंगी के प्रकार का वाद्य। अलवर, टोंक क्षेत्र।
- इसमें 5 तार। मेवों के भाटों का प्रमुख वाद्य।
- **चिकाराः**- कैर की लकड़ी से बने इस वाद्य का एक सिरा प्याले के आकार का इसमें 3 तार। वादन मुख्यतः गरसिया जनजाति के भोपों द्वारा।
- अलवर-भरतपुर क्षेत्र में जोगियों द्वारा पौराणिक आख्यानों या लोक गाथाओं के गायन के साथ। गरासियों तथा अलवर के मेवों में प्रचलित
- **गूजरीः**- रावण हत्था से छोटा, रावण हत्था की आकृति का। पांच तार।
- **सुरिन्दाः**- रोहिड़े की लकड़ी से निर्मित। प्रयोग मारवाड़ के लोक कलाकार, विशेषकर लंगा जाति के लोगो द्वारा। गायन के साथ नहीं बजाते।
- राजस्थान संगीत नाटय अकादमी का प्रतीक 'चिन्ह'।
- **दुकाकोः**- भील जाति द्वारा दीपावली पर। बैठकर व घुटनों के बीच दबाकर बजाते।
- **सूरजमण्डलः**- दो-ढाई फुट लम्बा यह वाद्य पश्चिमी राजस्थान में। लकड़ी के तख्ते पर तार कसे होते। प्राचीन वाद्य यंत्र, प्राचीन काल में इसे कोकिला वीणा कहते थे।
- **अपंगः**- भपंग की आकृति का । भील व गरासिया जनजाति द्वारा बजाया जाता है।

आदिवासियों के लोक वाद्य

- **तारपीः**- सुखी लौकी से निर्मित। विवाह के अवसर पर।
- कथौड़ी जनजाति में प्रचलित।
- **पावरीः**- बांसुरी की आकृति का साढ़े तीन फीट लंबा।
- **थालीसरः**- पीतल की थाली से। नवरात्रि में व मृतक के अंतिम संस्कार के बाद भक्ति गीत गाते समय।
- **टापराः**- साढें ढाई, फीट लंबे बांस से बना वाद्य यंत्र प्रेतबाधा निवारण और नवरात्रि के अवसर पर बजाया जाता है।
- खोखरा और गोरिया

लोक गीत

- **पावणा**-विवाह के बाद दामाद के लिए गाए जाने वाले गीत।
- **सीठणे**-विवाह समारोह में खुशी व आनन्द के लिए गाए जाते इन्हे गाली गीत कहते है।
- **जलो (जलाल)**-वधु पक्ष की स्त्रीयों द्वारा जब वर की बारात का डेरा देखने जाते समय।
- **कामण**-वर को जादू टोने से बचाने हेतु
- **चिरमी**-चिरमी के पौधे को संबोधित कर बाल ग्राम वधु द्वारा अपने भाई व पिता की प्रतीक्षा के समय की मनोदशा का चित्रण।
- **बिछूड़ों**-हाड़ौती क्षेत्र का लोकप्रिय गीत। ''मै तो मरी होती राज, खा गयो बेरी बीछूड़ो''।
- **केसरिया बालम**-पति की प्रतीक्षा करती हुई नारी की विरह व्यथा। यह रजवाड़ी गीत।
- **जीरो**-राजस्थान का प्रसिद्ध लोक गीत जिसमें पत्नी अपने पति से जीरा नहीं बोने का अनुरोध करती।
- **सुपणा**-विरहनी के स्वपन से संबंधी गीत।
- **पंछीड़ा**-हाड़ौती व ढुढ़ाड़ क्षेत्र में मेलों के अवसर पर गाया जाता है।
- **मोरिया (सगाई)** - यह जोक गीत उस युवती की मनोदशा को चित्रित करता है। जिसका संबंध तो निश्चित हो चुका है लेकिन विवाह में देरी है।
- **सुवंटिया**-भीलनी स्त्री द्वारा प्रदेश गए पति को इस गीत के द्वारा संदेश भेजा जाता है।
- **कलाली**-वीर रस प्रधान गीत, मेवाड़ क्षेत्र में प्रसिद्ध
- **गोरबंद** -ऊँट का श्रृंगार वर्णन गीत।
  ''गायां चरावती गोरबंद गुंथियों,
  भैस्यां चरावती पोयो म्हारा राज,
  म्होरों गोरबंद लूम्बालों''
  राजस्थान का लोक प्रिय गीत।
- **लावणी**-प्रियतम द्वारा अपनी प्रेमिका को बुलाने के अवसर पर लोकगीत गाया जाता है। राजस्थान में मोर ध्वज सेऊ संमन प्रसिद्ध लावणियाँ। भरथरी भी एक लावणी।
- **झोरावा**-जैसलमेर जिले में पति के परदेश जाने पर। यह प्रेमिका के वियोग में गाया जाने वाला, गीत है।
- **मूमल**-जैसलमेर में अतिप्रसिद्ध श्रृंगारिक लोक गीत, जिसमें मूमल का नखसिक वर्णन। ''म्हारै बरसाले री मूमल हालौनी एँ आलीजे रे देश''।
- **ढोलामारू**-सिरोही का गीत
- **तेजागीत**-किसानों का प्रेरक गीत
- **हिचकी**-किसी को याद में, गाया जाता है अलवर-मेवात का लोकप्रिय गीत।
- **दुपट्टा**-शादी के अवसर पर दूल्ले की सालियों द्वारा गाए जाने वाला गीत।
- **पीपली**-शेखावटी , बीकानेर तथा मारवाड़ के कुछ भागों में तीज के त्यौहार से कुछ दिन पूर्व।
- **हरजस**-राजस्थानी महिलाओं द्वारा गाए, जाने वाले सगुण भक्ति लोक गीत।
- रसिया-ब्रज, भरतपुर, धौलपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध है।
- **मरांसिये**-मारवाड़ क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति की मृत्यु पर गाये जाने वाले हृदय भेड़ी मार्मिक लोकगीत। जैसे-रतनगाणा मार्मिक गीत।
- **पटेल्या, बीछियां, लालर**-पहाड़ी क्षेत्रों के मुख्य गीत
- **हमसीठों**-भील स्त्री और पुरूष द्वारा साथ मिलकर गाया जाने वाला प्रसिद्ध लोक गीत।
- **ओल्यूँ**-किसी की याद में बेटी का विदाई के समय ''कंवर बाई री ओल्यूँ आवै ओ राज''
- **ईण्डोणी**-पानी भरने जाती महिलाओं द्वारा 'म्हारी सवा लाख री लूम गम गई। इंडोणी'।
- **कागा**-नायिका द्वारा कौए को सम्बोधित करके अपने प्रियतम के आने का शगुन मनाया जाता है।
  ''उड़-उड़ रे म्हारा काला रे कागला,
  जद म्हारा पिवजी घर आवै''।
- **काजलियों**-यह एक श्रृंगार प्रधान गीत। होली के अवसर पर चंग के साथ गाया जाता।
  ''काजल भरियों कूंपलों कोई
  धरयों पलंग अध बीच कोरो काजलियों।''
- **कुरजाँ**-प्रियतम को संदेश भिजवाने से संबंधित गीत।
- **घोड़ी**-बारात की निकासी पर घोड़ी गाते है। ''घोड़ी म्हारी चन्द्रमुखी सी, इन्द्रलोक सूँ आई ओ राज''
- **जच्चा/होलर**-बालक के जन्मोत्सव पर 'होलर जाया ने हुई दै बधाई थे म्हारा वंश बदायो रे अलबेली जच्चा'।
- **पैपयो**-यह दाम्पय प्रेम आदर्श को दशार्न वाला गीत, जिसमें प्रेयसी अपने प्रियतम से उपवन में आकर मिलने का अनुरोध करती है।
  'भंवर बांगा में आज्यो जी, एजी म्हारा।
  नाजूक जीव घबरावें, पपैया बोल्यो जी।।'
- **बधवा** -शुभ कार्य सम्पन्न होने पर ।
- **मांगीबाई** -मेवाड़ निवासी। केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारो देश सर्वप्रथम गाया। मांड गायिका।
- **स्व. श्रीमती गवरी देवी**-बीकानेर निवासी। मांड गायिका। विवाह जोधपुर निवासी मोहनलाल के साथ। जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा सम्मानित। 1986 संगीत नाटक अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार तथा राष्ट्रपति श्री आर.वेंकट रमन द्वारा ताम्रपत्र प्रदान। राजस्थान की मरू कोकिला।
- **बन्नो बेगम**-जयपरु। मांड गायिका। माता जौहर बाई जयपुर दरबार की प्रसिद्ध मांड गायिका एंव नृत्यांगान
- **जमीला बाई**-जोधपुर। प्रसिद्ध लोक गीत गायिक।
- **अल्लाह जिल्लाह बाई**-बीकानेर। मांड गायिका 1987 लंदन के अल्बर्ट हॉल में गायिकी की छाप छोड़ी। 1982 पद्म श्री राजस्थान श्री। 29 दिसम्बर 2003 को भारत सरकार ने 5 रू का डाक टिकट जारी।
- **गवरी देवी**-पाली, मांड गायिका।
- **हर का हिंडोला**-वृद्ध की मृत्यु पर गाया जाने वाला गीत।
- **कोयलड़ी**-कन्या पक्ष को स्त्रियों द्वारा कन्या की विदाई के समय।
- **रूपीड़ो, झालो, झूंटणियों**-राजस्थानी लोक गीत।
- **मींझर**-कन्हैयालाल सेठिया इस गीत के रचयिता।
- **भणतें**-राजस्थान में श्रम करते समय थकान को दूर करने हेतु गाये जाने वाले गीत।
- **गाडूलॉ, कूकडलौ, घूघरी**-लोक गीत।
- **बिणजारा**-बिणजारा लोग बिणज करते समय बैलों पर सामान लादकर ले जाते थे इसे बालुद कहा जाता था।
  'चम-चम चमके चूंदड़ी बिणजारा रे।
  कोई थोड़ो सो म्हारै सामी नाल रे बिणजारा रै।।

लोक कलाकार

साकर कमाल खॉ:-

- जन्म-हमीरा (जैसलमेर),
- कमायचा के जादूगर।
- केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी ने 1990-91ई. में 'लोक संगीत पुरस्कार, प्रदान किया।

पेपे खॉ:-

- जन्म- हमीरा (जैसलमेर)।
- साकर खॉ के छोटे भाई।
- बीन और शहनोई के प्रसिद्ध वादक।
- सुरणाई का जादूगर कहते है।

रामकिशन सोलंकी :-

- पुष्कर, अजमेर निवासी
- कुचामनी ख्याल के प्रमुख नगाड़ा वादक।
- 1976 राजस्थान संगीत नाटय अकादमी पुरस्कार।
- 1992 राष्ट्रीय स्तर पर अकादमी अवार्ड।

चॉद मोहम्मद खान:-

- जयपुर।
- विख्यात शहनाई वादक।
- सन् 1974 में बनी 'मृग तृष्णा' फिल्म की शूटिंग जयपुर के रामगढ़ झील के आस-पास के क्षेत्र में हुई, उस फिल्म की अदाकारा योगिता बाली ने जो मुजरा गाया था। उसके संगीत में चॉद मोहम्मद खां ने शहनाई पर संगीत की थी।

पं. जसकरण गोस्वामी-बीकानेर प्रख्यात सितार वादक।

पुरूषोत्तम दास-नाथद्वारा (राजसंमद) प्रसिद्ध पखावज वादक।

सद्दीक खाँ मागणियार-जन्म-झांपली(बाड़मेर)खड़ताल के।

विलियम जैम्स-बीकानेर। प्रसिद्ध बैड मास्टर।

राजस्थान के कला संस्थान

कला संस्थान	स्थापना वर्ष	अन्य तथ्य
भवानी नाट्यशाला (झालावाड़)	1921	शायक भवानी सिंह द्वारा निर्मित, यह ऑपेरा शैली पर आधारित है।
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर)	1950	देश का सबसे बड़ा पाण्डुलिपि भंडार स्थित है।
भारतीय लोक कला मण्डल	1952	इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य लोक कलाओं व कठपुलियों के शोध सर्वेक्षण प्रशिक्षण का प्रसार करना है।
राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर)	1958	उद्देश्य-साहित्कारों व साहित्यिक गतिविधियों को संरक्षण प्रदान करना। इसकी मासिक पत्रिका मधुमति है।
रूपायन संस्थान (बोरूंदा, जोधपुर)	1960	राजस्थान के लोक गीतों, कथाओं एवं भाषाओं की परम्परागत खोज कर उसका संकलन कर रही है।
लोक संस्कृति शोध संस्थान (चूरू)	1964	इसे नगर श्री भी कहा जाता है।
उर्दू अकादमी (जयपुर)	1979	नखलिस्तान नाम त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करती हें
राजस्थान भाषा, साहित्य व संस्कृति अकादमी (बीकानेर)	1983	यह अकादमी प्रवृतियों की जानकारी (साहित्यिक सामग्री तथा समाचार बुलिटेन) प्रदान करने हेतु जागती जोत नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन करती है।
राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी (जयपुर)	1986	यह ब्रज शतदल नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करती है।
जवाहर कला केन्द्र (जयपुर)	1993	कलाकारों को प्रोत्साहन देना, कला धरोहर का सरंक्षण करना।
चित्रशाला (बूंदी)	-	चित्रकला संग्रहालय, महाराजा उम्मेदसिंह के शासनकाल में निर्मित रंगीन चित्र (बूंदी चित्रकला, कलाकृतियां व मिनएचर पेंटिंग का सग्रंह है।)
पं. झाबरमल शोध संस्थान (जयपुर)	2000	पत्रकारिता में शोध के लिए